لَا اِلٰہَ اِلَّا اللّٰہُ مُحَمَّدٌ رَّسُوْلُ اللّٰہِ

साप्ताहिक हिन्दी बदर मसीह मौऊद[अ.] नम्बर

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम का इनामी चैलेंज
हर मुख़ालिफ़ को मुक़ाबिल पे बुलाया हम ने

क़ुरआन मजीद, अहादीस, और पिछली किताबों की पेशगोइयों के अनुसार अल्लाह तआला ने सय्यदना हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम को चौदहवीं सदी के शुरू में जो कि अत्यधिक अन्धेर और कुफ्र तथा गुमराही का ज़माना था इमाम महदी और मसीह मौऊद बना कर मबऊस फ़रमाया।

आप का महान मिशन क़ुरआन मजीद इन शब्दों में वर्णन करता है। لِيُظْهِرَهٗ عَلَى الدِّيْنِ كُلِّهٖ (सफ़10) अर्थात दुनिया के समस्त धर्मों पर इस्लाम को ग़ालिब करना। और आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने आप के महान मिशन को इन शब्दों में वर्णन फ़रमाया।

لَوْ كَانَ الْاِيْمَانُ عِنْدَ الثُّرَيَّا لَنَالَهٗ رِجَالٌ مِنْ هٰؤُلَاءِ

(बुख़ारी किताबुल तफ़सीर सूरह जुम्अ:)

अर्थात ईमान अगर ज़मीन से उठ कर सुरय्या सितारे पर भी चला गया हो तो इन में से कुछ लोग उसे ज़मीन पर क़ायम कर देंगे। एक रिवायत में रजुलौ का शब्द भी आया है। अर्थात एक महान इन्सान अर्थात मसीह मौऊद तथा महदी मअहूद उसे ज़मीन पर क़ायम कर देगा।

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम फ़रमाते हैं

ऐसे वक़्त में मैं ज़ाहिर हुआ हूँ कि जब कि इस्लामी अक़ीदे मतभेदों से भर गए थे। और कोई अक़ीदा मतभेद से ख़ाली न था मेरे लिए ज़रूरी नहीं था कि मैं अपनी हक़्क़ीत की कोई और दलील पेश करूँ क्योंकि ज़रूरत ख़ुद दलील है।

(ज़रूरतुल इमाम ,रूहानी ख़ज़ायन भाग 13 पृष्ठ 495)

आपने फ़रमाया ख़ुदा तआला ने इस ज़माना को अन्धकार में पा कर और दुनिया को अज्ञानता और कुफ्र और शिर्क में डूबा हुआ देखकर ईमान और सच्चाई और तक़्वा और सच्चाई को नष्ट होते हुए देख कर के मुझे भेजा है कि ताकि वह दोबारा दुनिया में इल्मी और व्यावहारिक और अख़लाक़ी और ईमानी सच्चाई को क़ायम करे।

(आईना कमालात इस्लाम ,रूहानी ख़ज़ायन भाग 5 पृष्ठ 251)

फ़रमाया "मैं उन समस्त लोगों के लिए भेजा गया हूँ जो ज़मीन पर रहते हैं चाहे वे एशिया के रहने वाले हैं और चाहे यूरोप के और चाहे अमरीका के।

(तिर्याक़ुल क़ुलूब,रूहानी ख़ज़ाइन भाग15 पृष्ठ 515)

आप फ़रमाते हैं अगर तुम ईमानदार हो तो शुक्र करो और शुक्र के सिज्दे करो कि वह ज़माना जिसकी प्रतीक्षा करते करते तुम्हारे बुज़ुर्ग गुज़र गए और बेशुमार रूहें उसके शौक़ में ही सफ़र कर गईं वह वक़्त तुम ने पा लिया। अब उसकी क़दर करना या न करना और इस से फ़ायदा उठाना या न उठाना तुम्हारे हाथ में है। मैं इसको बार-बार वर्णन करूँगा और इस के इज़हार से मैं रुक नहीं सकता कि मैं वही हूँ जो वक़्त पर मानव जाति के सुधार के लिए भेजा गया ताकि धर्म को ताज़ा तौर पर दिलों में क़ायम कर दिया जाए।

(फ़तह इस्लाम ,रूहानी ख़ज़ाइन भाग 3 पृष्ठ 8)

सय्यदना हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने अपने महान मिशन ग़लबा इस्लाम की पूर्णता के लिए ख़ुदा के हुज़ूर इस क़दर दुआएं और रोना धोना किया की इस का उदाहरण सिवाए आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के किसी और नबी में नहीं मिल सकता। इस के साथ-साथ आप ने निबन्ध लिखे,लैक्चरज़ दिए, मुनाज़रे तथा मुबाहसे किए,हज़ारों की संख्या में इश्तिहार प्रकाशित किए, 80 से अधिक किताबें लिखें। आपने अपनी किताबों तथा इश्तिहारों में इस्लाम,इस्लाम के संस्थापक हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहो अल्लाह अलैहि वसल्लम, क़ुरआन करीम और अपनी सच्चाई के सबूत के लिए बीसियों इनामी चैलेंज भी दिए। हम इस निबन्ध में आपके इनामी चैलेंज का ज़िक्र करेंगे।

1864 ई से 1867 ई हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने न चाहते हुए सियालकोट में नौकरी की। यहां से आपकी तब्लीग़ी मुहिम का आरम्भ होता है। मसीही पादरी मुसलमान उल्मा को शिकस्त पर शिकस्त देते लेकिन हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के मुक़ाबला पर उन की कुछ भी न चलती । सियालकोट की मज़हबी फ़िज़ा पर आप छाए हुए थे। एक प्रसिद्ध पादरी, बटलर आप पर श्रद्धा रखने वाला हो गया और आप की बातें सुनने अक्सर आप के पास आया करता। कुछ द्वेष रखने वाले लोगों ने उसे रोकना चाहा लेकिन पादरी ने उन्हें जवाब दिया :

"यह एक महान आदमी है कि अपनी बराबरी नहीं रखता। तुम उसको नहीं समझते मैं ख़ूब समझता हूँ। '

(तारीख़ अहमदियत भाग 1 पृष्ठ 93 प्रकाशन 2007 ई कादियान)

1872 ई मैं आप ने क़लमी जिहाद का आरम्भ किया। बेंगलूर के 10 दिन के अख़बार मंशूरे मुहम्मदी में 25 अगस्त 1872 में आपका पहला निबन्ध प्रकाशित हुआ। निबन्ध क्या था इस्लाम की समस्त धर्मों पर प्राथमिकता और उत्तम होने का ऐलान था। आपने लिखा

"समस्त इन्सानी मामलों और सम्बन्धों में सच्चाई ही समस्त ख़ूबियों की बुनियाद और आधार है। इस लिए एक सच्चे मज़हब की निशानदेही का आसान तरीक़ा यह है कि देखा जाए कि उसने सच्चाई पर चले की कहाँ तक ज़ोरदार और प्रभावकारी तरीक़ पर नसीहत की है। आपने समस्त धर्मों को चैलेंज दिया कि आप हर उस ग़ैर मुस्लिम को 500 रुपया बतौर इनाम देने के लिए तैयार हैं जो अपनी प्रमाणिक मज़हबी किताबों से उन शिक्षाओं के मुक़ाबला पर आधी बल्कि तिहाई शिक्षाएं भी पेश कर दें जो आप इस्लाम की प्रमाणिक और मुस्तनद किताबों से सच्चाई के विषय पर निकाल कर दिखाएँगे।

(तारीख़ अहमिदयत भाग 1पृष्ठ 118)

7 दिसम्बर1877 ई को वकील हिन्दुस्तान' और अन्य अख़बारों में आर्या समाजी लीडर स्वामी दयानन्द ने रूह के बारे में अपना यह विश्वास प्रकाशित किया कि

''अर्वाह मौजूदा बेअंत हैं और इस कसरत (प्रचुरता) से हैं कि परमेश्वर को भी उन की तादाद(संख्या) मालूम नहीं। इस वास्ते (लिए) हमेशा मुक्ति पाते रहते और पाते रहेंगे मगर कभी ख़त्म नहीं होएंगे।'

यह अल्लाह तआला की सख़्त तौहीन थी। और हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम यह बर्दाश्त नहीं कर सकते थे।आप सिलसिला-वार मज़मूनू के द्वारा उस का दान्त तोड़ने वाला जवाब दिया और इस झूटे अक़ीदा की धज्जियाँ बिखेर दें। आप ने चैलेंज दिया कि

स्वामी दयानन्द के पैरोकार समेत जो साहिब भी यह साबित करे कि अर्वाह (रूहें) बेअन्त हैं और परमेश्वर को उन की संख्या मालूम नहीं तो मैं इस को पाँच सौ रुपया इनाम दूँगा।

"यह मज़हबी दुनिया में आर्या समाज के ख़िलाफ़ पहला इनाम था जो आप ने पेश किया। जिसने आर्या समाज के कैंप में खलबली मचा दी और लाहौर आर्या समाज के सैक्रेटरी लाला जीवन दास को स्वामी दयानंद की सर्वमान्य लीडरशिप के ख़िलाफ़ बग़ावत का झण्डा बुलंद करते हुए निहायत बदहवासी

शेष पृष्ठ 18 पर

क्रम	विषय सूची	पृष्ठ
1	सम्पादकीय एवं विषय सूची	1
2	क़ुरआन मजीद और नबी करीम स.अ.व. की हदीसों में तथा हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के उपदेश	2
3	जलसा आज़म लाहौर का ईमान वर्धक आंखों देखा हाल। हज़रत भाई अब्दुर्रहमान साहिब रज़ि	3
4	जंग मुकद्दस	8
5	हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की सच्चाई दुश्मनों की हलाकत की रौशनी में	14

जमील अहमद नासिर प्रिंटर एवं पब्लिशर ने फ़ज़्ल-ए-उमर प्रिंटिंग प्रेस क़ादियान में छपवा कर दफ़्तर अख़बार बदर से प्रकाशित किया। प्रौपराइटर - निगरान बदर बोर्ड क़ादियान

वही है जिस ने उम्मी लोगों में एक महान रसूल प्रादुर्भव किया है, वह उन पर उस की आयतें तिलावत करता है, और उन्हें किताब तथा हिक्मत की शिक्षा देता है।

क़ुरआन मजीद

اِهْدِنَا الصِّرَاطَ الْمُسْتَقِيْمَ ۙ﴿۶﴾ صِرَاطَ الَّذِيْنَ اَنْعَمْتَ عَلَيْهِمْ ۙ غَيْرِ الْمَغْضُوْبِ عَلَيْهِمْ وَ لَا الضَّآلِّيْنَ (सूरह फातिहा- 6-7)

अनुवाद: हमें सीधे रास्ते पर चला उन लोगों के रास्ते पर जिन पर तूने इनाम किया है। जिन पर न तो(बाद में तेरा) ग़ज़ब नाज़िल हुआ(है) और न वे (बाद में) गुमराह (हो गए) हैं।

وَ اِذْ اَخَذَ اللّٰهُ مِيْثَاقَ النَّبِيّٖنَ لَمَاۤ اٰتَيْتُكُمْ مِّنْ كِتٰبٍ وَّ حِكْمَةٍ ثُمَّ جَآءَكُمْ رَسُوْلٌ مُّصَدِّقٌ لِّمَا مَعَكُمْ لَتُؤْمِنُنَّ بِهٖ وَ لَتَنْصُرُنَّهٗ ؕ قَالَ ءَاَقْرَرْتُمْ وَ اَخَذْتُمْ عَلٰى ذٰلِكُمْ اِصْرِيْ ؕ قَالُوْۤا اَقْرَرْنَا ؕ قَالَ فَاشْهَدُوْا وَ اَنَا مَعَكُمْ مِّنَ الشّٰهِدِيْنَ ○ (आले इम्रान 82)

अनुवाद: और (उस वक़्त को भी याद करो) जब अल्लाह तआला ने (अहले किताब से) सब नबियों वाला पुख़्ता वादा लिया था कि जो भी किताब और हिक्मत मैं तुम्हें दूं फिर तुम्हारे पास कोई ऐसा रसूल आए जो इस कलाम को पूरा करने वाला हो। जो तुम्हारे पास है तो तुम ज़रूर ही इस पर ईमान लाना और ज़रूर उस की मदद करना (और फ़रमाया था) कि क्या तुम इक़रार करते हो और इस पर मेरी(तरफ़ से) ज़िम्मेदारी स्वीकार करते हो ? (और उन्होंने कहा था हाँ हम इक़रार करते हैं , फ़रमाया अब तुम गवाह रहो। और मैं भी तुम्हारे साथ गवाहों में से(एक गवाह) हूँ

وَ مَنْ يُّطِعِ اللّٰهَ وَ الرَّسُوْلَ فَاُولٰٓئِكَ مَعَ الَّذِيْنَ اَنْعَمَ اللّٰهُ عَلَيْهِمْ مِّنَ النَّبِيّٖنَ وَ الصِّدِّيْقِيْنَ وَ الشُّهَدَآءِ وَ الصّٰلِحِيْنَ ۚ وَ حَسُنَ اُولٰٓئِكَ رَفِيْقًا ؕ﴿۷۰﴾ (अन्निसा 70)

अनुवाद: और जो (लोग भी)अल्लाह तआला और इस के रसूल की इताअत करेंगे वे उन लोगों में शामिल होंगे जिन पर अल्लाह तआला ने इनाम किया है अर्थात अंबिया और सिद्दीक़ीन और शुहदा और सालेहीन (में) और ये लोग (बहुत ही) अच्छे दोस्त हैं।

आं हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के उपदेश

عَنْ اَبِيْ هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللّٰهُ عَنْهُ عَنِ النَّبِيِّ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ لَا تَقُوْمُ السَّاعَةُ حَتّٰى يَنْزِلَ عِيْسَى بْنُ مَرْيَمَ حَكَمًا مُقْسِطًا وَاِمَامًا عَدْلًا فَيَكْسِرُ الصَّلِيْبَ وَيَقْتُلُ الْخِنْزِيْرَ وَيَضَعُ الْجِزْيَةَ وَيَفِيْضُ الْمَالَ حَتّٰى لَا يَقْبَلَهٗ اَحَدٌ۔ (सुनन इब्ने माजा किताबुल फित्न)

अनुवाद: हज़रत अबू हुरैरह रज़ि वर्णन करते हैं कि आँहज़रत सल्ल-ल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया जब तक ईसा बिन मर्यम जो मुंसिफ़ मिज़ाज हाकिम और इमाम आदिल होंगे मबऊस हो कर नहीं आते क़यामत नहीं आएगी। (जब वह मबऊस होंगे तो वह सलीब को तोड़ेंगे, सूअर को क़तल करेंगे, ज़िज़्या के नियम को ख़त्म करेंगे और ऐसा माल तकसीम करेंगे जिसे लोग क़बूल करने के लिए तैयार नहीं होंगे।

اَلَا اِنَّ عِيْسَى بْنَ مَرْيَمَ لَيْسَ بَيْنِيْ وَبَيْنَهٗ نَبِيٌّ وَلَا رَسُوْلٌ، اَلَا اِنَّهٗ خَلِيْفَتِيْ فِيْ اُمَّتِيْ مِنْ بَعْدِيْ اَلَا مَنْ اَدْرَكَهٗ فَلْيَقْرَأْ عَلَيْهِ السَّلَامَ۔ (तिबरानी अल-औस्त वस्सग़ीर)

अनुवाद: ख़बरदार हो कि ईसा बिन मर्यम (मसीह मौऊद) और मेरे मध्य कोई नबी या रसूल नहीं होगा। ख़ूब सन लो कि वह मेरे बाद उम्मत में मेरा ख़लीफ़ा होगा। याद रखो जिसे भी इन से मुलाक़ात का सौभाग्य हासिल हो वह उन्हें मेरा सलाम ज़रूर पहुंचाए

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सालम फरमाते हैं कि

"हमारे नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के बाद क़यामत तक ऐसा कोई नबी नहीं आयेगा जिस पर नयी शरीअत (धर्म विधान) अवतरित हो या जिसको आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की मध्यस्थता के बिना और ऐसी फ़ना फिर्रसूल की हालत के (अर्थात पूर्ण आज्ञा पालन और समर्पण के माध्यम के बिना) जो ख़ुदा के निकट उसका नाम मुहम्मद और अहमद रखा जाए यूँ ही नबुव्वत की उपाधि प्रदान की जाए। और जो ऐसा दावा करता है वह क़ाफिर है। इसमें असल भेद यही है कि ख़ात्मुन्नबिय्यीन का अर्थ यह चाहता है कि जब तक भिन्नता का कोई थोड़ा सा भी अन्तर बाक़ी है उस समय तक अगर कोई नबी कहलाएगा तो समझो उस मुहर को तोडने वाला होगा जो ख़ात्मुन्नबिय्यीन पर है। लेकिन अगर कोई व्यक्ति उसी ख़ात्मुन्नबिय्यीन में ऐसा खो जाए कि अत्यन्त एकरूपता के कारण और भिन्नता मिटा कर उसी का नाम पा लिया हो और स्वच्छ शीशे की तरह मुहम्मदी चेहरा का उसमें प्रतिबिम्ब हो गया हो तो वह बिना मुहर तोड़े नबी कहलाएगा क्योंकि वह प्रतिरूप के तौर पर मुहम्मद है। इसलिए उस व्यक्ति के दावा नबुव्वत के बावजूद जिसका नाम प्रतिरूप के तौर पर मुहम्मद और अहमद रखा गया फिर भी हमारा आक़ा हज़रत मुहम्मद मुस्तफा सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम खात्मुन्नबिय्यीन ही रहा। क्योंकि (प्रतिरूप के तौर पर) यह दूसरा मुहम्मद उसी मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की तस्वीर और उसी का नाम है। मगर ईसा मुहर तोडने के बिना आ नहीं सकता। क्योंकि उसकी नबुव्वत एक अलग नुबुव्वत है। अब अगर प्रतिरूपक अर्थों में भी कोई व्यक्ति नबी और रसूल नहीं हो सकता तो फिर इस आयत के क्या अर्थ हैं कि

اِهْدِنَا الصِّرَاطَ الْمُسْتَقِيْمَ ۙ﴿۶﴾ صِرَاطَ الَّذِيْنَ اَنْعَمْتَ عَلَيْهِمْ

इसलिए याद रखना चाहिए कि इन अर्थों की दृष्टि से मुझे नुबुव्वत और रिसालत से इन्कार नहीं है। इसी दृष्टि से हदीस की किताब सहीह मुस्लिम में भी मसीह मौऊद का नाम नबी रखा गया। अगर ख़ुदा तआला से ग़ैब (परोक्ष) की खबरें पाने वाला नबी का नाम नहीं रखता तो फिर बतलाओ किस नाम से उसको पुकारा जाए। अगर कहो कि उसका नाम मुहद्दस रखना चाहिए तो मैं कहता हूँ कि तहदीस का अर्थ किसी शब्दकोष की किताब में ग़ैब (परोक्ष) की खबरें पाकर भविष्यवाणी करना नहीं है लेकिन नुबुव्वत का अर्थ ग़ैब (परोक्ष) की बातों को पाकर भविष्यवाणी करना है और नबी एक ऐसा शब्द है जो अरबी और इब्रानी भाषाओं में समानार्थ है। अर्थात इब्रानी में इसी शब्द को नाबी कहते है और यह शब्द नाबा से बना है जिसका अर्थ यह है कि ख़ुदा से ख़बर पाकर भविष्यवाणी करना। और नबी के लिए शरीअत का लाना शर्त नहीं है। यह सिर्फ ईशप्रदत्त अनमोल इनाम है जिसके द्वारा ग़ैब (परोक्ष) की बातें प्रकट होती हैं। अत: मैं जबकि इस समय तक लगभग डेढ़ सौ भविष्यवाणियाँ ख़ुदा की ओर से पाकर अपनी आँखों से स्वयं देख चुका हूँ

कि वे स्पष्ट तौर पर पूरी हो गयीं तो मैं अपने बारे में नबी या रसूल के नाम से कैसे इनकार कर सकता हूँ। जब ख़ुदा तआला ने स्वयं मेरे ये नाम रखे हैं तो मैं कैसे रद्द कर दूँ या क्यूँ उसके अतिरिक्त किसी दूसरे से डरूँ। मुझे उस ख़ुदा की क़सम है जिसने मुझे भेजा है और जिस पर झूठ गढना लानतियों (अर्थात धिक्कृत लोगों) का काम है कि उसने मसीह मौऊद बनाकर मुझे भेजा है। और मैं जैसा कि क़ुरआन शरीफ

शेष पृष्ठ 18 पर

जलसा आज़म मज़ाहिब''लाहौर का ईमान वर्धक आँखों देखा हाल

हज़रत भाई अब्दुर्रहमान साहिब कादियानी रज़ी अल्लाह तआला अन्हो के क़लम से

(सय्यदना हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के प्रख्यात लैक्चर "इस्लामी उसूल की फ़िलासफ़ी" के बारे में हज़रत भाई अब्दुर्रहमान साहिब कादियानी रज़ी अल्लाह तआला अन्हो सहाबी हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने एक निबन्ध "जलसा आज़म मज़ाहिब ,लैक्चर इस्लामी उसूल की फ़िलासफ़ी" 20 जुलाई 1946 ई को लिखा था। यह निबन्ध पाठकों के लाभ के लिए सीरतुल महदी भाग 2 से पेश किया जा रहा है । इस निबन्ध में आपने इस जलसा और लैक्चर का निहायत ईमान वर्धक आँखों देखा हाल वर्णन फ़रमाया सम्पादक)

(1)सय्यदना हज़रत अक़दस मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के जोश तब्लीग़ और अल्लाह तआला का नाम बुलन्द करने के लिए लगन और धुन की कैफ़ीयत का वर्णन इन्सानी ताक़त से बाहर है।اَللّٰہُ اَعۡلَمُ حَیۡثُ یَجۡعَلُ رِسَالَتَہٗ हुज़ूर का मन्सब तथा स्थान ख़ुदा तआला ने इस्लाम को समस्त दूसरे धर्मों पर ग़ालिब कर दिखाना निर्धारित फ़रमाया है और जिन ख़वास को ये ख़िदमत दी हुई हैं उनके بَلِّغۡ مَاۤ اُنۡزِلَ اِلَیۡکَ مِنۡ رَّبِّکَ فَاِنۡ لَّمۡ تَفۡعَلۡ فَمَا بَلَّغۡتَ رِسَالَتَہٗ का हुक्म इलाही हमेशा क़ायम होता है

हुज़ूर ने तब्लीग़ के हक़ की अदायगी में कोई कमी बाकी न रखी और न ही कुछ भूले। क्या दिन, किया रात हुज़ूर को यही फ़िक्र रहती और हुज़ूर कोई अवसर तब्लीग़ का हाथ से जाने न दिया करते। उठते बैठते चलते और फिरते अकेले में और भीड़ में अत: हर हाल में इसी फ़िक्र और इसी धुन में रहते। अत: हुज़ूर की जीवनी का हर पृष्ठ और पवित्र ज़िन्दगी का हर लम्हा अपने आप में इस वर्णन का गवाह और सच्चा आदिल है। लंबे अध्ययन और हुज़ूर की लेखन की गहराईयों को अलग रखकर अगर हुज़ूर के सिर्फ एक दो पृष्ठ वाले इश्तिहार पर ही इंसाफ की नीयत से, द्वेष से अलग हो कर नज़र डाली जाए जो हुज़ूर ने 9 दिसम्बर 1890 को प्रकाशित फ़रमाया तो निसन्देह मेरे इस वर्णन की तसदीक़ करना पड़ेगी। और हुज़ूर की इस सच्ची तड़प और ख़ुलूस नीयत ही का नतीजा था कि अल्लाह तआला भी हर रंग में आपकी ग़ैरमामूली सहायता तथा मदद फ़रमाई और ग़ैब से सामान प्रदान फ़र्मा दिया करता और हुज़ूर ख़ुदा के इस फ़ज़ल तथा एहसान का प्राय नेअमत की शुक्रिया के तौर पर यूं ज़िक्र फ़रमाया करते कि

ख़ुदा का कितना फ़ज़ल तथा एहसान है कि इधर हमारे दिल में एक इच्छा पैदा होती है या कोई ज़रूरत पेश आती है और इधर अल्लाह तआला इसके पूरा करने के सामान प्रदान कर देता है।

(2)1892 ई का दूसरे आधा ज़माना था कि अचानक एक अजनबी इन्सान , साधु स्वभाव, भगवा कपड़ों पहने हुए शिवगुण चन्द्र नामक कादियान में आया और शीघ्र ही हमारी मज्लिसों का एक बे-तकल्लुफ़ व्यक्ति नज़र आने लगा। एक आधा दिन सय्यदना हज़रत हकीम मौलाना मौलवी नूरुद्दीन रज़ी अल्लाह तआला अन्हो की मज्लिस में सम्मिलित हुआ तो दूसरे ही दिन वह सय्यदना हज़रत अक़दस मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के दरबार शाम और सुबह की सैर में शामिल हो कर हुज़ूर के ख़ास ध्यान का पात्र बन गया। क्योंकि वह शख़्स अपने आपको हक़ का अभिलाषी और सच्चाई का इच्छुक ज़ाहिर करता हुआ अपनी रुहानी प्यास बुझाने के लिए आसमानी पानी की तलाश में दूर तथा नज़दीक ,बस्ती बस्ती बल्कि गांव गाव मारा-मारा फिरता हुआ कादियान की पवित्र बस्ती में अपने जन्म के लक्ष्य को पाने की उम्मीद लेकर आया और कुछ लेकर ही लौटने की नीयत से पहुंचा था और इस की नेक नीयती ही का नतीजा था कि वह बावजूद बिलकुल अजनबी होने के बहुत शीघ्र अपना लिया गया। वह न सिर्फ साधु था जो भगवा कपड़ों में अपनी ज़रूरतों को छिपाए था और न ही कोई ऐसा सवाली जिसको रूपया पैसा की ज़रूरत और रुपया पैसा का लालच कादियान में बंटते ख़ज़ानों की ख़बरें यहां खींच लाई हूँ बल्कि वास्तव में हक़ को चाहने वाला और सच्चाई का अभिलाषी था वर्ना ख़ुदा का चुना हुआ ज़माना की मसीह जिसकी फ़िरासत कामिल जौहर को पहचानने वाली थी और जो ख़ुदा के प्रदान किए गए नूर से देखा करता था यूं उस की तरफ़ ध्यान न देता ।

(3)शिवगुण चन्द्र एक पढ़ा लिखा और अक्ल वाला इन्सान था जो गर्वनमैंट में किसी अच्छे ओहदे पर था। कई घटनाओं ने दुनिया की नश्वरता का एक न मिटने वाला ख़्याल उस के दिल तथा दिमाग़ पर छा दिया। इस की बीवी और बच्चे बल्कि क़ारीबी तथा दूर के रिश्तेदार तक इस से जुदा हो गए और वह एकदम तन्हा रह गया। दिल तथा दिमाग़ में पैदा हुई तहरीक ने अन्दर ही अन्दर परवरिश पाई। नश्वर चीज़ों के प्रभावों ने इस के विचारों के रुख़ किसी ग़ैर-फ़ानी और अपने आप स्थापित रहने वाली हस्ती की तलाश की तरफ़ फेर दिया जिससे प्रभावित हो कर उसने नौकरी छोड़कर दुनिया को त्याग कर और तलाश हक़ का इरादा कर लिया और साधु बन कर इधर उधर घूमने और ढूंढने में व्यस्त हो गया। न जाने कितना समय फिरा और कहाँ कहाँ गया। उसने क्या कुछ देखा और सुना जिसके बाद किसी ने इस को हमारे आक़ा तथा मौला, हादी तथा ज़माने के राहनुमा का पता दिया और कादियान की निशानदेही की जिस पर वह सच्चे इख़लास तथा अक़ीदत से पहुंच कर मकसद को प्राप्त करने की कोशिश में व्यस्त हो गया। हुज़ूर की सोहबत में रह कर फ़ैज़ पाने लगा और होते होते ऐसा आशिक हुआ कि उसकी सारी ख़ुशी, तसल्ली तथा इत्मीनान हुज़ूर की सोहबत और बातों से जुड़ गई जिसकी वजह से वह यहीं टिक जाने पर तय्यार हो गया मगर अल्लाह तआला को इस के द्वारा अपना एक निशान ज़ाहिर करना मंज़ूर और करिश्मा क़ुदरत दिखाना चाहता था जिस के लिए इसी ज़ात बाबरकात ने इतने परिवर्तन किए और संसार कणों पर विशेष तसर्रुफ़ात फ़रमाए और एक शख़्स को कादियान पहुंचाया जो कभी लाला फिर मिस्टर और बावा और आख़िरी स्वामी शिवगुण चन्द्र के नाम से प्रसिद्ध हुआ।

(4)मेहमान नवाज़ी का गुण नबियों की आदत है और हुज़ूर को इस गुण में कमाल हासिल था। इसके साथ ही साथ हुस्ने सुलूक और एहसान में हुज़ूर अपनी मिसाल सिर्फ आप ही थे। तालीफ़ क़लूब के महान गुण के साथ हमदर्दी मानव जाति की भलाई की भावना हुज़ूर में अतुल्नीय थी और उन समस्त उत्तम गुणों और आचरणों के इलावा सच्चाई तथा सदाक़त और इल्म हिक्मत के ख़ज़ाने हुज़ूर के साथ थे जो हुज़ूर के ताल्लुक़ बिल्लाह और अल्लाह के समक्ष स्वीकार्य होने की दलील थे और इन हक़ीक़तों के साथ ही साथ ख़ुदा से वार्तालाप करने का सौभाग्य और क़बूलीयत दुआ के नमूने ऐसी प्रसिद्ध थे जिनसे कोई भी नेक फ़ितरत और पाक तबीयत प्रभावित हुए बिना न रह सकता था और वास्तव में यही वे चीज़ें हैं जिन को अपरिचित दुनिया ने जादू और सेहर का नाम देकर हुज़ूर से दुनिया जहां को दूर रखने की असफल कोशिश की है। स्वामी शिवगुण चन्द्र भी इन करामतों का शिकार हुए और जिस चीज़ की उनको तलाश थी और दुनिया में वह चीज़ उनको कहीं भी न मिली थी आख़िर ख़ुदा की ख़ास हिक्मत के अधीन उनको कादियान में वह कुछ मिल गया जिसकी उन्हें तलाश थी।

और वे कुछ उन्होंने यहां देखा जो दुनिया जहां में उन्होंने देखा न सुना था। वह ख़ुश थे अपनी किस्मत पर कि उनको जिस चीज़ की चाहत और तलाश थी आख़िर ख़ुदा तआला ने प्रदान कर दी मगर हमारे आक़ा इस से भी कहीं अधिक ख़ुश थे ख़ुदा के इस फ़ज़ल पर कि उसने हुज़ूर की एक दिली इच्छा के पूरा करने के लिए शिवगुण चन्द्र साहिब का वजूद पैदा फ़र्मा दिया है।

(5)हुज़ूर की पुरानी इच्छा थी कि विश्व के धर्मों की एक कान्फ्रैंस हो जिसमें हुज़ूर को क़ुरआन करीम की फ़ज़ीलत तथा कमाल और चमत्कार तथा इस्लाम के उपकार वर्णन करने का अवसर मिले। हर एक मज़हब का प्रतिनिधि अपने मज़हब की विशेषताएं वर्णन करे ताकि इस मैदान मुक़ाबला में अल्लाह का नाम बुल्न्द हो। इस्लाम की बरतरी और रसूल अक़रम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की सच्चाई प्रकट हो। अत: हुज़ूर की इस इच्छा को पूरा करने के लिए अल्लाह तआला ने स्वामी साहिब को कादियान पहुंचाया जिन्होंने हुज़ूर की इस परामर्श को सच्चे तथा झूठे में अन्तर का हक़ीक़ी माध्यम और सच्ची कसौटी यक़ीन कर के इसके आयोजन के लिए अपनी ख़िदमतें पेश कीं और फिर सम्पूर्ण कोशिशें कर के इस काम में लग गए। हिंदू और फिर गेरवे वस्त्र की वजह से भी और इल्म तथा तजुर्बा के कारण भी उनको हिंदुओं के हर ख़्याल और तथा वर्ग में प्रभाव मिलता गया और उनके परामर्श पर ध्यान दिया जाने लगा और इस काम के लिए एक हरकत पैदा हो गई। मर्कज़ी हिदायतों, परामर्श और मश्वरे उन के लिए सम्मुख आने वाली मुश्किलों का हल बनते और इस बेल के छत पर चढ़ जाने के लिए उनकी हर रंग में मदद और हौसला बढ़ाया जाता रहा। कभी वह ख़ुद सावधानी के साथ कादियान आते तो कभी ख़ास लोगों के द्वारा उनकी ज़रूरतों का प्रबन्ध किया जाता रहा और इस तरह होते होते कान्फ्रैंस के आयोजन की झलक नज़र आने लग गई। हुज़ूर के मार्ग दर्शन में एक ढांचा तैयार किया गया और काम करने वाले आदमियों और खर्च के बड़े हिस्सा का प्रबन्ध सय्यदना हज़रत अक़दस की तरफ़ से देखकर इस ढांचा में ज़िन्दगी के निशान भी प्रकट हो गए। और इस तरह स्वामी शिवगुण चन्द्र साहिब ने मानो हुज़ूर की इस दीनी इच्छा के पूरा करने में एक ग़ैबी फ़रिश्ता का काम किया।

(6)आख़िर ख़ुदा ख़ुदा कर के बड़ी मुश्किल घाटियों को पार करने और चटियल वीराने जंगलों को तय करने के बाद इस जलसा अर्थात "जलसा आज़म मज़ाहिब" के आयोजन की तारीख़ों का भी ऐलान हो गया जो 26 से 28 दिसम्बर 1896 ई निर्धारित हुईं। और टाऊन हाल लाहौर में इस के आयोजन का ऐलान किया गया। एक कमेटी सम्मान्नीय रईसों की जिस में इल्म दोस्त लोग शामिल थे, तय पा चुकी तो इस सूचना पर सय्यदना हज़रत अक़दस मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम को इतनी ख़ुशी हुई जैसे दुनिया जहान की बादशाहत किसी को मिल जाए।

तब हुज़ूर ने इस जलसा के लिए निबन्ध लिखने का इरादा फ़रमाया मगर मस्लिहत इलाही से हुज़ूर की तबीयत ख़राब हो गई और यह सिलसिला कुछ लम्बा भी हो गया मगर चूँकि जलसा की तारीखें निकट थीं और भय था कि निबन्ध रह ही न जाए हुज़ूर ने बीमारी तथा कष्ट की हालत में ही निबन्ध लिखना शुरू फ़र्मा दिया और चूँकि हज़रत मौलाना मौलवी अब्दुल करीम साहिब मरहूम तथा मग़फ़ूर रज़ी अल्लाह तआला अन्हो इन दिनों में किसी ज़रूरत के लिए स्यालकोट जा कर बीमार हो गए और उनकी बीमारी की सूचनाओं का अंदेशा था कि वह जलसा पर न पहुंच सकेंगे इस पर लंबे सोच विचार और मश्वरा के बाद फ़ैसला हुआ कि हुज़ूर का निबन्ध ख़्वाजा कमालुद्दीन साहिब पढ़ें अत: इस फ़ैसला के अधीन यह परामर्श किया गया कि

(क)हुज़ूर का निबन्ध जिसे आदरणीय हज़रत मुंशी जलालुद्दीन साहिब निवासी बलानी ज़िला गुजरात नक़ल करते थे कि हज़रत पीर-जी सिराजुल हक़ साहिब नुअमानी के सपुर्द यह काम किया गया किताबत के तरीक़ा पर लिखा जाए ताकि ख़्वाजा साहिब को पढ़ने में परेशानी न हो मगर हुज़ूर के फिर बीमार हो जाने की वजह से जब निबन्ध की तैयारी में अन्तराल पड़ गया तो हर दो लोगों ने मिलकर उस को सम्पूर्ण किया।

(ब)इस निबन्ध में जितनी कुरआन की आयतें , हदीसें या अरबी इबारात आईं वे अलग अच्छी लिखाई में लिखा कर ख़्वाजा साहिब को अच्छी तरह से रटा दी जाएं ताकि जलसा में पढ़ते वक़्त किसी प्रकार की ग़लती या रुकावट निबन्ध को बे-लुत्फ़ तथा बे-असर ही न बना दे।

(7)हुज़ूर का यह निबन्ध अच्छी लिखाई में लिखा हुआ सुबह की सैर में लफ़्ज़ लफ़्ज़ सुनाया जाया करता था और हुज़ूर की प्राय आदत भी यही थी कि जो भी किताब लिखा करते या इश्तिहार तथा रिसाला लिखा करते उनके विषयों को मज्लिस में बार-बार दुहराया करते थे। इतना कि बाक़ायदा हाज़िर रहने वाले ख़ुद्दाम को वह विषय याद हो जाया करते थे। इन दिनों की सुब्ह की सैर प्राय कादियान के उत्तर की तरफ गांव बुटर की तरफ़ हुआ करती थी और इसी निबन्ध के सुनने के लिए से कादियान में मौजूद लोग और मेहमान क़रीबन समस्त ही शौक़ और ख़ुशी से सैर में शामिल हुआ करते जिनकी संख्या लगभग पंद्रह बीस या पच्चीस तक हुआ करती थी। निबन्ध के कई हिस्सों की व्याख्या भी हुज़ूर चलते चलते फ़रमाते करते थे। यह तहरीर तथा तक़रीर नए नए बिन्दुओं, अजीब दर अजीब मआरिफ़ और ईमान वर्धक हक़ीक़तों तथा दलीलों पर आधारित हुआ करती थी। इन दिनों की सुब्ह की सैर में जिसके लिए हुज़ूर बावजूद बीमारी और कमज़ोरी के निकला करते थे बाद में मालूम हुआ कि मौलवी अबू सईद मुहम्मद हुसैन साहिब बटालवी के कई जासूस भी हुज़ूर के इस निबन्ध को सुनकर उनको रिपोर्ट पहुंचाया करते थे अत: हुज़ूर के निबन्ध की अक्सर आयतें जिन को हुज़ूर ने यथा स्थान पर मोतियों की लड़ी की तरह सजा कर उनसे बातें वर्णन फ़रमाई हैं मौलवी साहब ने अपने निबन्ध में एक साथ जमा कर दी हैं जिनका वहां सम्बन्ध है न स्थान और जोड़।

(8)जनाब ख़्वाजा कमालुद्दीन साहिब निबन्ध को पढ़ा करते। पढ़ने के तरीक़ों का अभ्यास किया करते थे और उनकी कोशिश हुआ करती थी कि पढ़ने के तरीक़ा तथा वर्णन में कोई नवीनता पैदा करें जिससे सुनने वाले ज़्यादा से ज़्यादा प्रभावित हो सकें। कुर्आन की आयतों, हादीसों या अरबी शब्दों या वाक्यों को याद करने की कोशिश किया करते। क़ुदरत ने ख़्वाजा साहिब को जहां उर्दू पढ़ने में ख़ास मलिका दिया था वहां कुरआन की आयतों की तिलावत में बावजूद कोशिश के बहुत कुछ कमी पाई जाती थी जिसे ख़्वाजा साहिब मेहनत और शौक़ के बावजूद पूरा करने से असमर्थ थे। इस के अतिरिक्त इन्हीं दिनों में कई उनके हमराज़ दोस्तों की ज़बानी मालूम हुआ कि दरअसल ख़्वाजा साहिब को निबन्ध की बुलंदी, कमाल नफ़ासत और उम्दगी के बारे में भी शंकाएं थी जिसका असर उनके तर्ज़ अदा तथा वर्णन पर पड़ना अनिवार्य था और अजीब बात नहीं कि यह बात सय्यदना हज़रत अक़दस मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम तक भी जा पहुंची हो।

(9)जलसा से कुछ ही दिन पहले अल्लाह तआला ने हुज़ूर को इल्हाम के द्वारा इस निबन्ध के बारे में बिशारत दी कि "यह वह मज़मून है जो सब पर ग़ालिब आएगा और इस की मक़बूलियत दिलों में घर कर जाएगी और कि यह बात बतौर एक "निशान सदाक़त" होगा। अत: हुज़ूर ने 21 दिसम्बर 1896 ई को एक इश्तिहार बउनवान

"सच्चाई के तालिबों के लिए एक अज़ीमुश्शान ख़ुशख़बरी"

लिख कर कातिब के हवाले किया और मुझ विनीत ग़ुलाम को याद फ़र्मा कर यह सम्मान बख़्शा और फ़रमाया कि

" मियां अब्दुर्रहमान इस इश्तिहार को छपवा कर ख़ुद लाहौर ले जाओ और ख़्वाजा साहिब को (जो कि एक ही दिन पहले जलसा के इंतज़ामों

के लिए लाहौर भेजे गए थे को पहुंचा कर हमारी तरफ़ से ताकीद कर देना कि "इस की ख़ूब इशाअत करें। ज़रूरत हो तो वहीं और छपवा लें। हमारी तरफ़ से उनको अच्छी तरह ताकीद करना क्योंकि वह कई बार डर जाया करते हैं, बार-बार और ज़ोर से यह पैग़ाम पहुंचा देना कि डरने की कोई बात नहीं। लोगों की मुख़ालिफ़त का ख़्याल इस काम में हरगिज़ रोक न बने। यह इन्सानी काम नहीं कि किसी के रोके रुक जाए बल्कि ख़ुदा का काम है जो बहरहाल पूरा हो कर रहेगा।"

(10)इश्तिहार लगभग आधी रात को तैयार हुआ और मैं उसी वक़्त ले कर पैदल बटाला को रवाना हो गया 22 दिसम्बर 1896 ई की दोपहर के क़रीब लाहौर पहुंचा। जनाब ख़्वाजा साहिब इस ज़माना में लाहौर की मशहूर मस्जिद, मस्जिद वज़ीर ख़ान के पीछे एक तंग सी गली में रहा करते थे जहां में उनको तलाश कर के जा मिला और इश्तिहारों का बंडल और हुज़ूर का हुक्म खोल खोल कर सुना दिया बल्कि बार-बार दोहरा भी दिया। ख़्वाजा साहिब के साथ उस वक़्त दो और दोस्त भी वहां मौजूद थे जिनके नाम मुझे याद नहीं रहे। ख़्वाजा साहिब ने इश्तिहारों का बंडल खोला और निबन्ध इश्तिहार पढ़ा और मैंने देखा कि चेहरा उनका बजाय प्रसन्न और ख़ुश होने के दुखी तथा उदास सा हो गया और मुझ से सम्बोधित हो कर फ़रमाने लगे

मियां हज़रत को क्या इल्म कि हमें यहां किन मुश्किलों का सामना हो रहा है। और मुख़ालिफ़त का कितना ज़ोर है। इन हालात में अगर यह इश्तिहार प्रकाशित किया गया तो यह एक बारूद के ढेर में चिंगारी का काम देगा और अजब नहीं कि नफ़स जलसा का आयोजन ही नामुमकिन हो जाए। मौक़ा पर मौजूदगी और हालात की पेचीदगी से आख़िर हम पर भी कोई ज़िम्मादारी आती है। अच्छा जो ख़ुदा कराए ,इंशा अल्लाह तआला करेंगे

आख़िर सोच विचार, मश्वरों और ऊंच नीच, उतार चढ़ाओ की देख-भाल के बाद दूसरी या तीसरी रात के अंधेरों में कई कम प्रसिद्ध स्थानों पर कुछ इश्तिहार चिपकाए जिनका होना या न होना बराबर था क्योंकि ग़ैर-मारूफ़ स्थामों के इलावा वह इश्तिहार इतने ऊंचे लगाए गए थे कि प्रथम तो कोई देखे ही नहीं और अगर देख पाए तो पढ़ ही न सके।

(11)मैंने देखा और सुना भी कि सय्यदना हज़रत अक़दस के असल निबन्ध का हिस्सा ख़्वाजा साहिब कादियान से अपने साथ लाहौर लाए थे उस का अध्ययन और कुरआन की आयातों की तिलावत के अभ्यास का सिलसिला भी जारी था। ख़्वाजा साहिब के लाहौर चले आने के बाद जो जो हिस्सा निबन्ध तैयार होता जाता उसकी नक़ल उनको लाहौर पहुंचाई जाती रहती और यह सिलसिला 25 दिसम्बर 1896 ई की शाम तक जारी रहा था या शायद 26 दिसम्बर की रात तक भी।

(12)जलसा ख़ुदा के फ़ज़ल से हुआ। बेहतर जगह और बेहतर प्रबन्ध के अधीन हुआ और वास्तव में सख़्त मुख़ालफ़तों के तूफ़ान और मुश्किलों की कठिन और ख़तरनाक घाटियों को पार करने के बाद हुआ। बड़ी बड़ी रोकें खड़ी की गईं। तरह तरह के बहाने और बारीक से बारीक चालें चली गईं मगर अन्त में हिंदू तथा यहूद और उनके सयाहक तथा मददगारों का ख़ैबरी क़िला टूटा और अन्त में वही हुआ जिसका इलहाम इलाही

अलल्लाो अकबर ख़रेबत ख़ैबर

मैं वर्णन हुआ था। दुश्मनों ने टाऊन हाल न लेने दिया तो अल्लाह तआला ने इस से भी बेहतर सामान कर दिया और इस्लामीया हाई स्कूल अंदरून शेरांवाला दरवाज़ा की खुली और दो मंज़िला इमारत ,लंबे चौड़े सेहन, बड़े बड़े कमरों ,हाल कमरा और गैलरियों को मिला कर एक बड़ी इमारत जो एक बड़े इज्तिमा के लिए काफ़ी और उचित थी ख़ुदा ने दिला दी 26 दिसम्बर का दिन जलसा का पहला दिन था। हाज़िरी हौसला वर्धक न थी। सय्यदना हज़रत अक़दस मसीह पाक अलैहिस्सलाम के निबन्ध के लिए 27 दिसम्बर का दिन और डेढ़ बजे दोपहर का वक़्त निर्धारित था। ख़ुदा की क़ुदरत का करिश्मा और उसके ख़ास फ़ज़ल का नतीजा था कि हज़रत मौलाना मौलवी अब्दुलकरीम साहिब वफ़ूर इशक़ तथा मुहब्बत से बेताब हो कर वालहाना रंग में वक़्त से पहले लाहौर पहुंच गए जिनके तशरीफ़ लाने से हम लोगों के लिए ख़ास सन्तोष और ख़ुशी के सामान अल्लाह तआला ने पहुंचा दिए।

(13) हालात का विरोध, मुख़ालिफ़त का जोश और विभिन्न प्रकार की मुश्किलें इसी तरह वक़्त की उचित न होने के कारण ख़तरा था और चिन्ता थी कि जलसा शायद दिल की इच्छा के अनुसार रौनक वाला न हो सकेगा मगर अल्लाह तआला की शान कि ख़ुदा तआला की मख़लूख़ यूं खिंची चली आ रही थी जैसे फ़रिश्तों की फ़ौज उसे धकेले ला रही हो और उनकी तहरीक का इतना गहरा असर हुआ कि लोगों के दिल बदल गए और उनके दिलों में बजाय शत्रुता तथा नफ़रत के इशक़ एवं मुहब्बत भर गई। विरोधियों के विरोध ने खाद का काम दिया और रोकने तथा शरारत करने वालों की भीड़ ने लोगों के ध्यान को जलसा की तरफ़ फेर दिया जिससे लोग तेज़ी से तेज़ क़दम हो हो कर जलसा गाह की तरफ़ बढ़े और होते होते आख़िर नौबत यहां तक पहुंची कि सेहन और इस के समस्त बग़ली कमरे और हाल भर गया। ऊपर की गैलरियों में तिल धरने को जगह न रही और भीड़ इतनी बढ़ गई कि गुंजाइश निकालने को सिमटना और सिकुड़ना पड़ा। दिसम्बर की छुट्टियों की वजह से जगह जगह पर जलसे कान्फ्रैंसें और मीटिंगें हो रही थीं। लोगों की व्यस्तता उनके दुनयावी कामों में व्यस्तता और भौतिक लाभों को प्राप्त करने की कोशशि की मौजूदगी में एक ख़ालिस मज़हबी जलसा तथा कान्फ्रैंस में इतनी भीड़ को देखने वाला हर छोटा बड़ा इस मंज़र से प्रभावित हो कर इस हाज़िरी की कामयाबी को ग़ैरमामूली, ख़ास और ख़ुदाई तहरीक का नतीजा कहने पर मजबूर था और एक हिंदू को इस से इन्कार था न ही सिख और आर्या समाजी को। मुसलमान को इस से मतभेद था न ईसाई यहूदी या देव समाजी को बल्कि हर फ़िर्क़ा तथा वर्ग के लोग आज के इस आदत से हट कर जज़ब और बेनज़ीर आकर्षण से प्रभावित और दिल उनके वास्तव में प्रभावित हो कर नर्म थे। देखने और सुनने में फ़र्क़ होता है इस आयोजन की तस्वीर शब्दों में संभव नहीं। संक्षेप यह कि वह इज्तिमा अपने माहौल के कारण अवश्य ही महान ,बेनज़ीर और नि:सन्कोच ग़ैरमामूली था

(14) निबन्ध का शुरू होना था कि लोग अपने आप झूमने लगे और उनकी ज़बानों पर अपने आप सुब्हान अल्लाह और सुब्हान अल्लाह के वाक्य जारी हो गए। सुना हुआ था कि इल्म तवज्जा और मिस्मरेज़म से एक मामूल से तो यह कुछ संभव हो जाता है मगर हज़ारों की एक ऐसी भीड़ पर जिसमें विभिन्न ताकतों, अक़ीदों और ख़्याल के लोग जमा थे इस अवस्था का छा जाना अवश्य ही आदत से हट कर और चमत्कारपूर्ण प्रभाव का नतीजा था। यह ठीक है कि हज़रत मौलाना मौलवी अब्दुल करीम साहिब को क़ुरआन करीम से एक इश्क़ था और अल्लाह तआला ने आवाज़ में भी उनकी लहन दाऊदी की झलक पैदा कर रखी थी इसी तरह वह इन आयतों तथा मज़ामीन के क्रम और हक़ायक़ से प्रभावित हो कर जिस रिक़्क़त ,वेदना और जोश से तिलावत फ़रमाते आपका वह पढ़ना आपकी हार्दिक अवस्था और लज़्ज़त तथा आन्नद के साथ मिलकर श्रुताओं को प्रभावित किए बिना न रहता था मगर इस मज्लिस की कैफ़ीयत बिलकुल ही निराली थी और कुछ ऐसा समां बंधा कि आरम्भ से लेकर अन्त तक कुरआन की आयतें क्या और उनकी व्याख्या तफ़सीर क्या, सारा ही निबन्ध कुछ ऐसा फ़सीह, बलीग़, प्रभावित करने वाला और दिलचस्प था कि न मौलाना महोदय के लहजा में अन्तर आया और न जोश लज़्ज़त ही फीके पड़े। मआरिफ़ की रवानी के साथ इबारत की सरसता और निबन्ध की ख़ूबी ने सुनने वालों को कुछ ऐसा दीवाना बना

दिया जैसे कोई जादू किए हों। मैंने कानों सुना कि हिंदू और सिख बल्कि कट्टर आर्या समाजी और ईसाई तक अपने आप सुब्हान अल्लाह सुब्हान अल्लाह पुकार रहे थे।

हज़ारों इन्सानों की यह भीड़ इस तरह बिना हिले डुले तथा हरकत किए बैठा था जैसे कोई बुत बेजान हों। और उनके सिरों पर अगर परिन्दे भी आन बैठते तो अश्चर्य की बात न थी। निबन्ध की रुहानी कैफ़ीयत दिलों पर हावी और उसके पढ़े जाने की गूंज के सिवा सांस तक लेने की आवाज़ न आती थी यहां तक कि ख़ुदा तआला की क़ुदरत से इस वक़्त जानवर तक ख़ामोश थे और निबन्ध के चुम्बकीय प्रभाव में कोई बाहरी आवाज़ बाधा डालने वाली नहीं हो रही थी। कम से कम निरन्तर दो घंटे यही अवस्था रही।

अफ़सोस कि मैं इस अवस्था को प्रकट करने के योग्य नहीं। काश मैं इस योग्य होता कि जो कुछ मैंने वहां देखा और सुना इसके छवि का कण मात्र ही वर्णन कर सकता जिससे इस इल्मी चमत्कार तथा निशान की महानता दुनिया पर स्पष्ट हो कर मानव जाति के कान हक़ के सुनने को और दिल उसके स्वीकार करने को तत्पर होते जिससे दुनिया जहान के गुनाह, पाप और ग़फ़लतें दूर हो कर हज़ारों इन्सान सच्चाई के स्वीकार करने की तौफ़ीक़ पा जाते।

(15)साढ़े तीन बज गए। वक़्त ख़त्म हो गया जिसकी वजह से कुछ मिनट के लिए इस लज़्ज़त तथा आन्नद की अवस्था में रुकावट हुई। अगला आधा घंटा मौलवी मुबारक अली साहिब सियालकोट के निबन्ध के लिए था। उन्होंने जल्दी से खड़े हो कर पब्लिक की इस मांग को कि "यही निबन्ध जारी रखा जाए और किसी और की बजाय इसी निबन्ध को वक़्त दिया जाए उसी निबन्ध को मुकम्मल तथा पूरा किया जाए"अपना वक़्त देकर पूरा कर दिया बल्कि ऐलान किया कि मैं अपना वक़्त और अपनी इच्छा इस क़ीमती निबन्ध पर क़ुर्बान करता हूँ। अत: फिर वही प्यारी, पसन्दीदा और दिलकश तथा दिलनशीं दास्तान शुरू हुई और फिर वही समां बंध गया। चार बज गए मगर निबन्ध अभी बाक़ी था और प्यास लोगों की बजाय कम होने के बढ़ी जा रही थी। श्रुताओं की मांग और ख़ुद प्रबन्धकों की दिलचस्पी की वजह से निबन्ध पढ़ा जाता रहा यहां तक कि साढ़े पाँच बज गए। रात के अंधेरे ने अपनी काली चादर फैलानी शुरू कर दी। मजबूर हो कर यह निहायत ही मीठी और मार्फ़त वाली और आन्नद देने वाली मज्लिस समापन को पहुंची और बाक़ी निबन्ध 29 दिसम्बर के लिए मुल्तवी किया गया।

कोई दिल न था जो इस आन्नद को महसूस न करता हो। कोई ज़बान न थी जो उस की ख़ूबी तथा बरतरी को स्वीकार न करती हो और इस की तारीफ़ तथा प्रशंसा में लीन न थी। हर कोई अपने करनी और कथनी से स्वीकार कर रहा था कि वास्तव में निबन्ध सब पर विजयी रहा और अपनी बुलंदी , लताफ़त और ख़ूबी के कारण इस जलसा की ज़ीनत, रूहे रवाँ और कामयाबी का ज़ामिन है। न सिर्फ यही बल्कि हमने अपने कानों सुना और आँखों देखा कि कई हिंदू और सुख साहिब मुस्लमानों को गले लगा लगा कर कह रहे थे कि

"अगर यही क़ुरआन की शिक्षा और यही इस्लाम है जो आज मिर्ज़ा साहिब ने वर्णन फ़रमाया है तो हम लोग आज नहीं तो कल इस को स्वीकार करने पर मजबूर होंगे और अगर मिर्ज़ा साहिब के इसी किस्म के एक दो निबन्ध और सुनाए तो इस में कोई शंका नहीं कि इस्लाम ही हमारा भी मज़हब होगा।"

(16) आज का जलसा 27 दिसम्बर बख़ास्त हो गया। लोग घरों को जा रहे थे जलसा गाह के दरवाज़ा पर मैंने देखा कि इस के दोनों तरफ़ दो आदमी खड़े सय्यदना हज़रत अक़दस अलैहिस्सलाम का वही इश्तिहार तक़सीम कर रहे थे जो हुज़ूर ने मेरे हाथ ख़ास ताकीदी आदेश के साथ भिजवाया था ताकि प्रसिद्ध स्थानों पर चिपकाया जाए और जलसा से पहले ही पहले प्रचुरता से प्रकाशित किया जाए बल्कि यह भी ताकीद थी कि यह थोड़ा है ज़रूरत के अनुसार लाहौर ही में और प्रकाशित करा लिया जाए ताकि समय से प्रकाशन से इस ख़ुदाई निशान की महानता का इज़हार हो जिस से नेक रूहें क़बूल हक़ के लिए तैयार हूँ मगर हुआ यह कि ख़्वाजा कमालुद्दीन साहिब के भय खाने की वजह से पहले दुनिया जहान ने ख़ुदाई निशान की महानता को देखा और उसके ग़लबा का इक़रार तथा स्वीकारोक्ति और बाद में उनको वह इश्तिहार पहुंचाया गया जो कई दिन पहले छापा और अच्छी तरह प्रकाशित करने को भेजा गया था अत: जब सय्यदना हज़रत अक़दस मसीह पाक अलैहिस्सलाम को ख़्वाजा साहिब की इस कमज़ोरी तथा सुस्ती का इल्म हुआ तो हुज़ूर बहुत नाराज़ हुए और कई दिन तक जब-जब भी इस इलाही निशान का ज़िक्र हुआ करता या बाहर से इस कामयाबी के बारे में रिपोर्टें मिलतीं साथ ही ख़्वाजा साहिब की इस कमज़ोरी पर अफ़सोस का इज़हार भी सुनने में आया करता था।

निबन्ध की मक़बूलियत और पब्लिक की मांग से प्रभावित हो कर मैनिजिंग कमेटी का इज्लास ख़ास आयोजित हुआ और इस में यह क़रारदाद पास की गई कि हज़रत मिर्ज़ा साहिब के निबन्ध की पूर्णता के लिए मज्लिस अपने प्रोग्राम में एक दिन बढ़ा कर 29 दिसम्बर का चौथा दिन शामिल करती है।

हुज़ूर के निबन्ध की ग़ैरमामूली मक़बूलियत ग़ैरों को कब भाती थी। मौलवी मुहम्मद अब्दुल्लाह साहिब ने वक़्त की अधिकता की इस ख़ुसूसीयत और महत्व को कम करने के लिए कोशिश कर के अपने लिए भी वक़्त बढ़ाए जाने की इच्छा की अत: आधा घंटा उन के लिए भी बढ़ा दिया गया मगर दूसरे दिन ख़ुद तशरीफ़ ही न लाए और अपना वक़्त मौलवी मुहम्मद हुसैन साहिब बटालवी के लिए वक़्फ़ कर दिया जिसकी वजह ज़ाहिर है अयाँ राचे बयाँ। मगर ख़ुदा की शान हाज़री इतनी हौसला तोड़ने वाली थी कि जलसा गाह के भर जाने के इंतज़ार ही इंतज़ार में वक़्त गुज़रने लगा न मज्लिस कल की तरह रौनक़ वाली हो और न मौलवी मुहम्मद हुसैन साहिब खड़े हों। आख़िर बहुत इंतज़ार के बावजूद जब वह इच्छा पूरी होती नज़र न आई तो दिल न चाहते हुए मजबूर होकर खड़े हुए और जो कुछ लिखा था पढ़ दिया और अधिक वक़्त लेने के बावजूद न ख़ुद ख़ुश हुए न पब्लिक ने कोई प्रशंसा की।

(17) 29 दिसम्बर की सुबह साढ़े नौ बजे कार्रवाई जलसा शुरू होने वाली थी। दिसम्बर का आख़िर। सर्दी की शिद्दत और वक़्त इतना सवेरे का था कि लोग ज़रूरतों से फारिग़ होना तो दूर इतनी सवेरे तो आम तौर से शहरों के लोग जागने के भी आदी नहीं होते। फ़िक्र थी, भय था कि शायद हाज़री बहुत ही कम रहेगी और इस तरह आज वह लुत्फ़ शायद नसीब न होगा मगर ख़ुदा के काम अपने अंदर एक ग़ैरमामूली जज़्ब और चुम्बकीय कशिश रखते हैं जिसे कोई ताक़त रोक ही नहीं सकती। इन्सान अगर ग़फ़लत तथा सुस्ती दिखाएंगे तो वह फ़रिश्तों से काम लेता है। अत:

इर्शाद हज़रत अमीरुल मोमिनीन

"अपनी इबादतों को भी विशेष करें और दुनिया को भी इस्लाम की वास्तविक शिक्षा से अवगत कराएं।"

(ख़ुत्बा जुम्अ: 17 मई 2019)

तालिबे दुआ

KHALEEL AHMAD

S/O LATE HAJI BASHEER AHMAD SB AND FAMILY, JAMAAT AHMADIYYA BIJUPURA, SAHARANPUR (U.P)

सवेरे ही सवेरे ठिठुरते हुए और सर्दी से सिमटते और सुकड़ते हुए ख़ल्क़े ख़ुदा झुण्ड के झुण्ड और जौक़ से इस प्रचुरता और तेज़ी से आई कि 27 की दोपहर बाद का नज़ारा भी मात पड़ गया और जलसा निहायत शौकत तथा महानता एवं ख़ैर ख़ूबी से जारी रहा और फिर निहायत कामयाबी तथा सफलता से समाप्त हुआ और इस तरह हुज़ूर का निबन्ध दुनिया जहान पर عَلٰی رَغۡمِ اُنُوۡفِ الۡاَعۡدَاءِ अपने विजय, ख़ूबी, कामयाबी और महानता का सिक्का बिठा कर इल्मी दुनिया के लिए हमेशा क़ायम रहने वाला निशान बन कर आसमान दुनिया पर सूरज और चांद की तरह चमकने लगा। और दोस्त तो दूर दुश्मन भी प्रशंसा किए बिना न रह सके। अपने और पराए, पब्लिक और प्रबन्धक अत: हर विभाग में इसी निबन्ध का चर्चा और ज़बानों पर हक़ जारी था। अख़बारों ने निबन्ध लिखे और इस सच्चाई को स्वीकार किया। कमेटी प्रबन्धकों ने अपनी तरफ़ से इस इक़रार को रिपोर्ट में दर्ज कर के इज़हार हक़ीक़त किया। सच है

चढ़े चांद छुपे नहीं रह सकते।

और उसका इनकार बेवक़ूफ़ी की दलील होता है। इस तरह अल्लाह तआला ने समय से पहले अपने पवित्र मक़बूल बंदे सय्यदना हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के द्वारा जो कुछ फ़रमाया था वह हो कर रहा। ख़ुदा की बात पूरी हुई और दुनिया की कोई ताक़त ,कोई तदबीर ,कोई धोखा और तरीका ख़ुदाई कलाम के पूरा होने में रोक न बन सका

(18)रिपोर्ट जलसा आज़म मज़ाहिब प्रकाशित हुई और कमेटी के प्रबन्धकों ने जिसके मेम्बर हर मज़हब तथा मिल्लत के मैंबर और उच्च वर्ग के ज़िम्मेदार लोग थे, की तरफ़ से उसके ख़र्च से प्रकाशित हुई। समस्त वे निबन्ध जो इस जलसा में पढ़े गए या उस के लिए लिखे गए इस में सम्पूर्ण रूप से दर्ज किए गए कि दुनिया इस मज़हबी दंगल और मैदान मुक़ाबला में आने वाले सभी को एक साथ देखकर ग़ौर और फ़ैसला और हक़ सच्चाई और झूठ में अन्तर कर सके। मगर हक़ीक़त यह थी कि क़ुरआन करीम की महानता , इस्लाम की सच्चाई , मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की सदाक़त और सय्यदना हज़रत अक़दस मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के ख़ुदा के मुक़र्रब और मक़बूल बंदे, इसी के बुलाए बोलने वाले, इसके सच्चे नबी तथा रसूल होने के लिए बतौर गवाह और दलील एवं तर्क यह मामले सदैव रहे। हुज़ूर का यही वह निबन्ध है जो उर्दू में "इस्लामी उसूल की फ़िलासफ़ी" के नाम से और अंग्रेज़ी में "टीचिंगज़ आफ़ इस्लाम" के नाम तथा विषय के अधीन कई बार हज़ारों बल्कि लाखों की संख्या में प्रकाशित हो कर दुनिया जहान की रुहानी लज़्ज़त तथा आन्नद के सामान और हिदायत के रास्ते आसान करता और न सिर्फ यही बल्कि दुनिया की और कई भाषाओं में भी छप कर प्रकाशित होता चला आ रहा है।

(19)यह रिपोर्ट प्रकाशित हुई और ख़ुदा की ख़ुदाई गवाह है कि हज़ारों इन्सानों ने जो कुछ जलसा में देखा और सुना था वही कुछ रिपोर्ट में दर्ज हुआ। वही निबन्ध जो धर्मों के प्रतिनिधियों ने लिखे और सुनाए और फिर उन्होंने कमेटी के प्रबन्धकों के हवाले किए। ठीक-ठीक और बिलकुल वही और उसी तरह प्रकाशित हुए थे। मगर क्या कहा जाए मौलवी मुहम्मद हुसैन साहिब बटालवी को और उनकी अक़ल तथा समझदारी को कि उन्होंने रिपोर्ट के प्रकाशन पर यह शोर शुरू कर दिया कि उनके नाम से जो निबन्ध इस में प्रकाशित कराया गया है, वह वास्तव में उनका है ही नहीं।

मौलवी साहिब का उद्देश्य इस आरोप लगाने से ज़ाहिर है कि मुक़ाबला में हारने के अपमान को छुपाना थी। हालाँकि उनकी यह हरकत "उज्र गुनाह बदतर अज़ गुनाह" (गुनाह का बहाना बनाना गुनाह से बुरा है।) और अपने हाथों अपनी मिट्टी उड़ाने के समान था और यह बात प्रबन्धकों से छुपी न था। अत: प्रबन्धकों ने मौलवी साहिब के इस शोर को ध्यान देने योग्य न समझा और इस तरह मौलवी साहब की पर्दादारी की बजाय और भी ज़्यादा पर्दादरी हुई जिससे "मौलाना साहिब" जल भुन कर राख हो गए और इस गहरे ज़ख़्म से तिलमिलाने लगे जिसका भरना उनसे संभव न था क्योंकि वह इन्सानी हाथों से न था कि इन्सानी कोशिशें उस को अच्छा कर सकतीं। वर्ना अगर हक़ीक़त यही थी जिसका उनको शिकवा था तो क्यों ना अपना असल निबन्ध प्रकाशित कर के प्रबन्धकों के इस धोखा को सब के सामाने कर दिखाया।

बरीं अक़लो दानिश बबायद ग्रेस्त

(20) स्वामी शिवगुण चन्द्र साहिब जिनके द्वारा अल्लाह तआला ने इस महान सच्चाई के निशान के इज़्हार के सामान पैदा किए, जलसा की समस्त कार्रवाई के दौरान में और फिर रिपोर्ट के प्रकाशन तक तो मिलते मिलाते और आते-जाते रहे फिर न मालूम वह क्या हुए और कहाँ चले गए। मानो ख़ुदाई क़ुदरत का हाथ उन्हें इसी सेवा के उद्देश्य से कादियान लाया था और फिर पहले की तरह ग़ायब कर दिया।

नोट : हज़रत मुंशी जलालुद्दीन साहिब बलानवी और हज़रत पीर जी सिराजुल हक़ साहिब नौमानी रिज़वानुल्लाह अलैहिम दोनों बुज़ुर्गों के हाथ का नक़ल किया हज़रत अक़दस का वह निबन्ध जिस पर से हज़रत मौलाना मौलवी अब्दुल करीम साहिब ने इस जलसा में पढ़ कर सुनाया था आज तक मेरे पास सुरक्षित है मगर चूँकि इस मुक़द्दस और क़ीमती अमानत की हिफ़ाज़त का हक़ अदा करने से असमर्थ हूँ अत: उसे क़ौमी अमानत समझ कर उस को सय्यदना क़मरुल अंबिया हज़रत साहिबज़ादा आली मक़ाम मिर्ज़ा बशीर अहमद साहिब सलमा रब्बहू के सपुर्द करता हूँ जो ऐसे कामों के सब से अधिक अधिकारी और योग्य हैं ताकि क़ायम होने वाले क़ौमी म्यूज़ियम में रखकर उस को आने वाली नस्लों के ईमान तथा विश्वास में ज़्यादती और इर्फ़ान में तरक़्क़ी का माध्यम बना सकें।

फ़क़त

अबदुर्रहमान कादियानी

☆ ☆ ☆

इर्शाद हज़रत अमीरुल मोमिनीन

"अगर तुम चाहते हो कि तुम्हें दोनों दुनिया की फत्ह हासिल हो और लोगों के दिलों पर फत्ह पाओ तो पवित्रता धारण करो, और अपनी बात सुनो, और दूसरों को अपने उच्च आचरण का नमूना दिखाओ तब अलबत्ता सफल हो जाओगे।"

तालिबे दुआ

धानू शेरपा

सैक्रेट्ररी जमाअत अहमदिया देवदमतांग (सिक्कम)

इर्शाद हज़रत अमीरुल मोमिनीन ख़लीफतुल मसीह ख़ामिस

ख़िलाफत का निज़ाम भी अल्लाह तआला और उस के रसूल के आदेशों और निज़ाम का हिस्सा है।

(ख़ुत्बा जुम्अ: 24 मई 2019 ई)

तालिबे दुआ

मुहम्मद शुएब सुलेजा पुत्र जनाब मुहम्मद ज़ाहिद सुलेजा मरहूम तथा फैमली, अहमदिया जमाअत कानपुर(उत्तर प्रदेश)

जंग मुक़द्दस

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम और डिप्टी अब्दुल्लाह आथम के मध्य

महान मुबाहिसा (शास्त्रार्थ)

दिनांक 22 मई1893 से 5 जून 1893 को अमृतसर में ईसाईयों और इस्लाम वालों के मध्य एक मुनाज़रा हुआ जिसमें इस्लाम की तरफ़ से सय्यदना हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम और ईसाईयों की तरफ़ से डिप्टी अब्दुल्लाह आथम मुनाज़िर थे। यह मुनाज़रा "जंग मुक़द्दस' कै नाम से प्रैस ज़ियाउल-इस्लाम कादियान दारुल अमान से हाजी हाफ़िज़ हकीम फ़ज़लदीन साहिब की निगरानी में दिनांक 20 अक्तूबर 1904 ई को प्रकाशित हुआ। पाठक रुहानी ख़ज़ायन के भाग 6 मैं इस का अध्ययन कर सकते हैं। इस जगह इस किताब का वह परिचय जो हज़रत मौलाना जलालुद्दीन शमस साहिब रज़ी अल्लाह तआला अन्हो ने रुहानी ख़ज़ायन भाग 6 के आरम्भ में लिखा है , पाठकों के लाभ के लिए पेश किया जा रहा है। (सम्पादक)

किताब "जंग मुक़द्दस' इस महान मुबाहिसा की सम्पूर्ण लेख का नाम है जो अमृतसर में इस्लाम वालों और ईसाईयों के मध्य 22 मई 1893 ई से लेकर 5 जून1893 ई तक हुआ। जिसमें इस्लाम वालों की तरफ़ से हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम और ईसाईयों की तरफ़ से डिप्टी अब्दुल्लाह आथम मुनाज़िर थे।

मुबाहिसा का कारण:

रुहानी ख़ज़ायन के भाग 1 और 3 में हम पंजाब और हिन्दुस्तान के ईसाई मिशनरियों की कोशशों का वर्णन कर चुके हैं और लिख चुके हैं कि इस वक़्त मसीहीयत की तब्लीग़ पूरे ज़ोरों पर थी। और विभिन्न शहरों और देहातों में उनके मिशन स्थापित थे। और हिन्दुस्तानी मुस्लमान और अन्य क़ौमों के लोग एक के बाद दूसरा ईसाई हो रहे थे। यहां तक कि यह ख़्याल किया जाने लगा था कि कुछ सालों में हिन्दुस्तान ईसाईयत की आग़ोश में आ जाएगा। अत:1888 ई में पंजाब के लेफ़टन्ट गवर्नर चार्ल्स अची सन ने शिमला में मसीही मुबल्लिग़ों की एक मीटिंग में तक़रीर करते हुए कहा

जिस रफ़्तार से हिन्दोस्तान की मामूली आबादी में इज़ाफ़ा हो रहा है इस से चार पाँच गुना तेज़-रफ़्तार से ईसाईयत इस देश में फैल रही है। और इस वक़्त हिन्दुस्तानी ईसाईयों की संख्या दस लाख के क़रीब पहुंच चुकी है।

(दी मिशन्ज़' लेखक रेवरनड राबर्ट क्लार्क)

हाशिया :रेवरनड राबर्ट क्लार्क ने अपनी किताब "दी मिशन्ज़ आफ़ दी सी.ऐम ऐस इन पंजाब ऐंड सिंध' प्रकाशन सी.ऐम.ऐस लन्डन1904 ई में इस मुबाहिसा को The great controversy. अर्थात एक महान मुबाहिसा क़रार दिया है और इस मुबाहिसा को जंग मुक़द्दस का नाम ख़ुद डाक्टर हैनरी मार्टिन क्लार्क ने दिया

हाशिया अब्दुल्लाह आथम लगभग1838 ई में अंबाला में पैदा हुए और 28 मार्च1853 ई को उन्होंने कराची में बप्तिस्मा लिया। और इसी मौक़ा पर उन्होंने अपने नाम के साथ आसिम यानी गुनहगार का शब्द लगाया। पहले अंबाला, तरनतारन और बटाला में तहसीलदार रहे। फिर स्यालकोट, अंबाला और करनाल में ई.ए सी के ओहदा पर रहे और फिर रिटायर्ड होने के बाद उन्होंने अपनी ख़िदमतें अमृतसर मिशन को सपुर्द कर दें और इस्लाम के ख़िलाफ़ कुछ किताबें लिखीं।

इस से पहले 1851 ई में हिन्दुस्तानी ईसाई सिर्फ 91092 थे और 1881 ई में उनकी संख्या 417372 थी। जिस ज़माना में यह मुबाहिसा हुआ उस वक़्त मसीही मुनादी ईसाई मिशनरी यूरोपियन और हिन्दुस्तानी पंजाब के सैंकड़ों स्थानों पर लोगों को ईसाईयत की तरफ़ दावत दे रहे थे और दज्जाल पूरे ज़ोर से इस्लाम धर्म की तबाही के लिए रात दिन मसरूफ़ था और उलमाए इस्लाम ख़रगोश के ख्वाब देखने में व्यस्त थे। सबसे पहले चर्च मिशनरी सोसाइटी ने हिन्दुस्तान में 1799 ई में तब्लीग़ी काम शुरू किया था। लेकिन इस वक़्त बहुत सी मिशनरी सोसाइटियां काम कर रही थीं जिनके हैड क्वार्टर्ज़ इंग्लिस्तान जर्मनी और अमरीका इत्यादि देश थे 1901 ई में इन मिशनरी सोसाइटियों की संख्या 37 थी और एक बहुत बड़ी तादाद मिशनरियों की ऐसी भी थी जो इन सोसाइटियों से सम्बन्ध नहीं रखते थे। मध्य एशिया में ईसाइयत के मिशनरी काम के लिए वह पंजाब को एक क़ुदरती बेस (Base) समझते थे और पंजाब के 13 मशहूर शहरों में उनके बड़े बड़े मिशन क़ायम थे। इन में से एक मिशन अमृतसर में स्थापित था। यह मिशन चर्च मिशनरी सोसाइटी ने 1852 ई में स्थापित किया था और जंडियाला ज़िला अमृतसर में ईसाई मिशन की बुनियाद1854 ई में रखी गई थी। लेकिन जब डाक्टर हैनरी मार्टिन क्लार्क ऐम डी सी ऐम (एडंबरा ऐम आर ए ऐस सी .ऐम .ऐस ज़िला अमृतसर के मैडीकल मिशनरी इंचार्ज थे तो उन्होंने 1882 ई में अमृतसर मैडीकल मिशन की एक शाख़ जंडियाला में भी जारी कर दी जो ईसाइयत की तरक्की का नया दरवाज़ा साबित हुई। ईसाई मुनादी कई स्थानों पर नसीहत करने लगे। जंडियाला के मुसलमानों में से एक मियां मुहम्मद बख़श पांदा मकतब देसी थे वह बावजूद मामूली तालीम रखने के उन के मुक़ाबला के लिए खड़े हो गए और उन्होंने कई दूसरे मुसलमान भाईयों को भी ईसाई मुनादों पर सवाल करने सिखा दिए। अब जंडियाला के मुसलमानों और मसीही मुनादों में गुफ़्तुगूएँ शुरू हो गईं। आख़िर जंडियाला के ईसाईयों ने डाक्टर क्लार्क से सारी हालात का वर्णन किया तो उन्होंने जंडियाला के मसीहियों की तरफ़ से मियां मुहम्मद बख़श साहिब को सम्बोधित कर के जंडियाला मुसलमानों के नाम एक ख़त लिखा इस में डाक्टर क्लार्क ने जंडियाला के मसीहियों की तरफ़ से लिखा कि

"आप चाहे ख़ुद या अपने मज़हब वालों से परामर्श कर के एक वक़्त निर्धारित करें और जिस किसी बुज़ुर्ग पर आपकी तसल्ली हो उसे बुलाएं और हम भी निर्धारित वक़्त पर महफ़िल शरीफ़ में किसी अपने को पेश करेंगे कि जलसा और फ़ैसला ऊपर वर्णन की गई बातों का अच्छी तरह हो जाए।"

और लिखा : "अगर इस्लाम के लोग ऐसे मुबाहिसा में शरीक न होना चाहें तो आइन्दा को अपने बातों के घोड़ों को मैदाने गुफ़्तगु में तेज़ी न दें और मुनादी के समय या अनय अवसरों पर बे-बुनियाद तर्कों से बाज़ आकर ख़ामोशी धारण करें।"

(हज्जतुल इस्लाम, रुहानी ख़ज़ायन, भाग 6 पृष्ठ 60)

यह ख़त मियां मुहम्मद बख़श साहिब को 11 अप्रैल1893 ई को मिला जो उन्होंने मापने ख़त के हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की ख़िदमत में भेज दिया। और अपने ख़त में हुज़ूर से यह निवेदन किया कि

"जंडियाला के मुसलमान कमज़ोर तथा मिस्कीन हैं इसलिए आपकी सेवा में निवेदन करता हूँ कि श्रीमान केवल अल्लाह के लिए जंडियाला के मुसलमानों की सहायता करें अन्यथा मुसलमानों पर कलंक आ जाएगा।

(हुज्जतुल इस्लाम , रुहानी ख़ज़ायन, भाग 6 पृष्ठ 59)

इस ख़त के मिलने पर हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम बहुत ख़ुश हुए और मियां मुहम्मद बख़्श साहिब को इस का उचित जवाब भिजवाने के इलावा अपने एक ख़त 13 अप्रैल 1893 ई को सीधा जंडियाला की मसीहियों के नाम डाक्टर क्लार्क अमृतसर की मार्फ़त भेज दिया। जिसमें आपने उनकी दावत मुबाहिसा जो मियां मुहम्मद बख़श साहिब पांदा को लिखे ख़त का ज़िक्र करके लिखा

"जंडियाला के मुसलमानों का हमसे कुछ ज़्यादा हक़ नहीं बल्कि जिस हालत में ख़ुदावंद करीम और रहीम ने इस विनीत को इन्हीं कामों के लिए भेजा है तो एक सख़्त गुनाह होगा कि ऐसे अवसर पर ख़ामोश रहूं। इस लिए में आप लोगों को सूचना देता हूँ कि इस काम के लिए मैं ही हाज़िर हूँ।" (हुज्जतुल इस्लाम , रुहानी ख़ज़ायन, भाग 6 पृष्ठ 61)

और लिखा कि

"यह बहस ज़िन्दा मज़हब या मुर्दा मज़हब की पड़ताल के बारे में होगी और देखा जाएगा कि जिन रुहानी निशानों का मज़हब और किताब ने दावा किया है वे अब भी इस में पाई जाती हैं या नहीं।"

(हुज्जतुल इस्लाम, रुहानी ख़ज़ायन, भाग 6 पृष्ठ 63- 64)

और इस बात का सबूत इस तरह पेश किया जाएगा कि

"इस्लाम वालों का कोई व्यक्ति इस तालीम और निशानों के अनुसार जो कामिल मुसलमान होने के लिए क़ुरआन करीम में मौजूद हैं अपने नफ़्स को साबित करे। और अगर न कर सके तो झूठ बोलने वाला है न मुसलमान। और ऐसा ही ईसाई साहिबों में से एक आदमी इस शिक्षा और निशानों के अनुसार जो इंजील शरीफ़ में मौजूद हैं अपने नफ़्स को साबित कर के दिखलाए और अगर वह साबित न कर सके तो वह झूठ बोलने वाला है न ईसाई।

(हुज्जतुल इस्लाम , रुहानी ख़ज़ायन, भाग 6 पृष्ठ 62)

इसके जवाब में 18 अप्रैल 1893 ई को जंडियाला के इसाइयों की तरफ़ से डाक्टर क्लार्क ने लिखा

"हमारा दावा आप से नहीं अपितु जंडियाला के मुहम्मदियों से है। हम आपका निमन्त्रण स्वीकार करने में असमर्थ हैं। उनकी ओर हम ने पत्र लिखा हुआ है और अभी उत्तर के प्रतीक्षक हैं। अगर वह आपको स्वीकार कर के इस जंग मुक़द्दस के लिए अपनी तरफ़ से पेश करें तो हमारा कुछ बहाना नहीं बल्कि ठीक ख़ुशी है।"

(हुज्जतुल इस्लाम , रुहानी ख़ज़ायन, भाग 6 पृष्ठ 64)

23 अप्रैल 1893 ई को इस ख़त का जवाब देते हुए पादरी साहिब को हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने लिखा कि मैं अपने कुछ प्रिय दोस्त बतौर सफ़ीर चुन कर के आपकी ख़िदमत में रवाना करता हूँ और उम्मीद रखता हूँ कि इस पाक जंग के लिए आप मुझे मुक़ाबला पर मंज़ूर फ़रमाएँगे। जब आपका पहला ख़त जो जंडियाला के कई मुस्लमानों के नाम था मुझ को मिला और मैंने ये इबारतें पढ़ीं कि कोई है कि हमारा मुक़ाबला करे तो मेरी रूह उस वक़्त बोल उठी कि हाँ मैं हूँ जिसके हाथ पर ख़ुदा तआला मुसलमानों को फ़तह देगा। और सच्चाई को ज़ाहिर करेगा। वह हक़ जो मुझ को मिला है और वह सूर्य जिसने हम में उदय किया है वह अब पोशीदा रहना नहीं चाहता। मैं देखता हूँ कि अब वह ज़ोरदार रोशनी के साथ निकलेगा। और दिलों पर अपना हाथ डालेगा। और अपनी तरफ़ खींच लाएगा।

और फ़रमाया

"आप जानते हैं कि जंडियाला में कोई मशहूर और नामी फ़ाज़िल नहीं और यह आपकी शान से भी दूर होगा कि आप अवाम से उलझते फिरें और इस विनीत का हाल आप पर छुपा नहीं कि आप साहिबों के मुक़ाबला के लिए दस साल से मैदान में खड़ा है। जंडियाला में मेरे विचार में एक भी नहीं जो मैदान का सिपाही माना जाए।"

(हुज्जतुल ,रुहानी ख़ज़ायन, भाग 6 पृष्ठ 65)

और आप ने यह भी स्पष्ट कर दिया कि

"यह बेहस सिर्फ़ ज़मीन तक सीमित न रहे बल्कि आसमान भी इस के साथ शामिल हो और मुक़ाबला सिर्फ इस बात में हो कि रुहानी ज़िन्दगी और आसमानी क़बूलीयत और रोशन ज़मीरी किस मज़हब में है और मैं और मेरा मुक़ाबिल अपनी-अपनी किताब के प्रभाव अपने अपने नफ़्स में साबित करें।"

(हुज्तुल इस्लाम , रुहानी ख़ज़ायन, भाग 6 पृष्ठ 66)

आप के सफ़ीरों का वफ़द उस ख़त को लेकर अमृतसर पहुंचा और डाक्टर हैनरी मार्टिन क्लार्क से उन की बातचीत हुई और मुनाज़रा की शर्तें तय हो गईं। तब 24 अप्रैल 1893 ई को डाक्टर क्लार्क ने आपकी सेवा में लिखा कि

"जनाब ने जो मुसलमानों की तरफ़ से मुझे मुक़ाबला के लिए दावत की है इस को मैं ख़ुशी से स्वीकार स्वीकार करता हूँ आपकी सिफ़ारत ने आपकी तरफ़ से मुबाहिसा और ज़रुरी शर्तों का फ़ैसला कर लिया है ..आप सूचना दें कि आप इन शर्तों को क़बूल करते हैं या नहीं।"

(हज्जतुल इस्लाम, रुहानी ख़ज़ायन, भाग 6 पृष्ठ 66-67)

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने 25 अप्रैल 1893 ई को पादरी डाक्टर क्लार्क को जवाब में लिखा कि

"मैं इन समस्त शर्तों को स्वीकार करता हूँ जिन पर आपके और मेरे दोस्तों के हस्ताक्षर हो चुके हैं।"

(हुज्जतुल , रुहानी ख़ज़ायन, भाग 6 पृष्ठ 69)

मंज़ूरी देते हुए आपने यह भी तहरीर फ़रमाया कि इस मुबाहसा को दोनों धर्मों में फ़ैसला करने वाला बनाने के लिए यह भी होना ज़रूरी है कि छ: दिन के मुबाहसा के बाद सातवें दिन एक रुहानी मुक़ाबला मुबाहला के रूप में किया जाए और दोनों पक्ष में यह दुआ करें।

"जैसे ईसाई पक्ष यह कहे कि वह ईसा मसीह नासरी जिस पर मैं ईमान लाता हूँ वही ख़ुदा है और क़ुरआन इन्सान का झूठ है ख़ुदा तआला की किताब नहीं और अगर मैं इस बात में सच्चा नहीं तो मेरे पर एक साल के अंदर ऐसा अज़ाब नाज़िल हो जिससे मेरा अपमान प्रकट हो जाए और ऐसा ही यह विनीत दुआ करेगा कि हे कामिल और बुज़ुर्ग ख़ुदा मैं जानता हूँ कि वास्तव में ईसा मसीह नासरी तेरा बंदा और तेरा रसूल है ख़ुदा हरगिज़ नहीं और क़ुरआन करीम तेरी पाक किताब और मुहम्मद मुस्तुफ़ा सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम तेरा प्यारा और बर्गुज़ीदा रसूल है और अगर मैं इस बात में सच्चा नहीं तो मेरे पर एक साल के अंदर कोई ऐसा अज़ाब नाज़िल कर जिससे मेरा अपमान प्रकट हो जाए और हे ख़ुदा मेरे अपमान के लिए यह बात काफ़ी होगी कि एक वर्ष के अंदर तेरी तरफ़ से मेरे समर्थन में कोई ऐसा निशान ज़ाहिर न हो जिसके मुक़ाबला से समस्त मुख़ालिफ़ असमर्थ रहें।"

(हुज्जतुल इस्लाम , रुहानी ख़ज़ायन, भाग 6 पृष्ठ 70)

आसमानी निशान दिखाने के लिए दावत

इस के बाद आप ने वह इश्तिहार लिखा जिसका विषय है

"डाक्टर पादरी क्लार्क का जंग मुक़द्दस और उनके मुक़ाबला के लिए

अल्लाह तआला का उपदेश

رَبَّنَآ اِنَّنَآ اٰمَنَّا فَاغْفِرْ لَنَا ذُنُوْبَنَا وَقِنَا عَذَابَ النَّارِ (آل عمران 17)

हे हमारे रब्ब निसन्देह हम ईमान ले आए
अतः हमारे गुनाह माफ कर दे और हमें आग के अज़ाब से बचा।

तालिबे दुआ

MUHAMMAD MAJEED AND FAMILY

AMEER DIST: ROUPR. PUNJAB

दुआ का अभिलाषी
जी.एम. मुहम्मद शरीफ़
जमाअत अहमदिया मरकरा (कर्नाटक)

इश्तिहार' इस में संक्षिप्त रूप से मुनाज़रा की तय की गई शर्तों के वर्णन के इलावा मुबाहिसा के बाद मुबाहला और निशान दिखाने की दावत दी गई है

मुबाहला के बारे में हज़ूर ने फ़रमाया

"वह सिर्फ इस क़दर काफ़ी है कि दोनों पक्ष अपने मज़हब के समर्थन के लिए ख़ुदा तआला से आसमानी निशान चाहें और उन निशानों के ज़हूर के लिए एक साल की समय सीमा स्थापित हो फिर जिस पक्ष के समर्थन में कोई आसमानी निशान ज़ाहिर हो जो इन्सानी ताक़तों से बढ़कर हो जिसका मुक़ाबला विरोधी पक्ष से न हो सके तो लाज़िम होगा कि पराजित पक्ष इस पक्ष का मज़हब धारण करे जिसको ख़ुदा तआला ने अपने आसमानी निशान के साथ विजयी किया है और मज़हब धारण करने से अगर इन्कार करे तो वाजिब होगा कि अपनी आधी जायदाद इस सच्चे मज़हब की सहायता के उद्देश्य से विजयी पक्ष के सुपर्द कर दे।"

(हुज्जतुल इस्लाम , रुहानी ख़ज़ाइन, भाग 6 पृष्ठ 48)

और फ़रमाया

"अगर एक साल के समय में दोनों तरफ़ से कोई निशान ज़ाहिर न हो या दोनों तरफ़ से ज़ाहिर हो तो यह लिखवने वाला इस अवस्था में भी अपने आप को पराजित समझेगा और ऐसी सज़ा के योग्य ठहरेगा जो वर्णन हो चुकी है चूंकि मैं ख़ुदा तआला की तरफ़ से मामूर हूँ और विजय पाने की बिशारत पा चुका हूँ अत: अगर कोई ईसाई साहिब मेरे मुक़ाबला पर आसमानी निशान दिखलाए या मैं एक साल तक दिखला ना सकूं तो मेरा झूठ पर होना खुल गया मेरी सच्चाई के लिए यह ज़रूरी है कि मेरी तरफ़ से मुबाहला के बाद एक साल के अंदर ज़रूर निशान ज़ाहिर हो। और अगर निशान ज़ाहिर न हो तो फिर मैं ख़ुदा तआला की तरफ़ से नहीं हूँ और न सिर्फ वही सज़ा बल्कि मौत की सज़ा के योग्य हूँ।"

(हुज्जतुल इस्लाम, रुहानी ख़ज़ायन, भाग 6 पृष्ठ 49)

"आप ने निशान दिखाने और मुबाहला के बारे में मुबाहिसा के दौरान में बार-बार दूसरे पक्ष को ध्यान दिलाया है लेकिन इन में से कोई इस रुहानी मुक़ाबला के लिए तय्यार न हुआ। और अब्दुल्लाह आथम ने तो अपने एक ख़त में साफ़ लिख दिया

"हमें यह बात स्वीकार नहीं हैं कि पुरानी शिक्षाओं के लिए नए चमत्कार की कुछ भी ज़रूरत है इस लिए हम चमत्कार के लिए न कुछ ज़रूरत और न सामर्थ्य अपने अंदर देखते हैं बहरहाल अगर जनाब किसी चमत्कार के दिखलाने पर तय्यार हैं तो हम उस के देखने से आँखें बंद न करेंगे और जिस क़दर सुधार अपनी ग़लती की आपके चमत्कार से कर सकते हैं उसको अपना फ़र्ज़ समझेंगे ।"

(हुज्जतुल इस्लाम, रुहानी ख़ज़ाइन, भाग 6 पृष्ठ 52)

हुज़ूर ने निशान देखने के बाद बिना देरी के मुसलमान हो जाने की जो शर्त लगाई थी मिस्टर अब्दुल्लाह आथम ने अपने ख़त दिनांक 9 मई 1893 ई में इन शब्दों में स्वीकार कर लिया है कि

"अगर जनाब या और कोई आदमी किसी सूरत से भी अर्थात चमत्कार का चेलन्ज या क़ुरआन की अकाट्य बौधिक शिक्षाओं को संभव और अल्लाह तआला की सिफत रब्बानी को प्रमाणित कर सकें तो मैं स्वीकार करता हूँ कि मुसलमान हो जाऊंगा।"

(सच्चाई का इज़हार, रुहानी ख़ज़ायन, भाग 6 पृष्ठ 80)

मुबाहिसा की शर्तें तय हो चुकीं। जंडियाला के मुसलमानों ने भी अपनी रजामंदी का इज़हार कर दिया लेकिन पादरी आथम और अन्य पादरियों को डाक्टर क्लार्क का हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम से मुनाज़रा स्वीकार कर लेना पसन्द न था। अत: शेख़ नूर अहमद साहिब मालिक रियाज़ हिन्द प्रैस अमृतसर अपने रिसाला "नूर अहमद" पृष्ठ 22 में लिखते हैं कि जब वह और मिस्त्री क़ुतुबुद्दीन साहिब पादरी इमादुद्दीन साहिब के पास यह पूछने के लिए पहुंचे कि

"कौन से पादरी साहिब हैं जिन्होंने ईसाइयों की तरफ़ से मुनाज़रा में पेश होना है। और हज़रत मिर्ज़ा साहिब से ख़त लिखना शुरू कर रखा है। क्या आप इस मुनाज़रा में बतौर मुनाज़िर पेश होंगे तो उन्होंने कहा कि मैं तो ऐसे मुनाज़रों को व्यर्थ समझता हूँ। भला मैं ऐसा क्यों करने लगा। इस पर मैंने उन को जंडियाला की घटना का सुनाया तो कहने लगे हैनरी मार्टिन क्लार्क लौंडा होगा।

और जब वह हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के प्रतिनिधियों को जो शर्तें तय करने के लिए हुज़ूर ने अमृतसर भिजवाए थे रेलवे स्टेशन से ही डाक्टर क्लार्क की कोठी पर लेकर पहुंचे तो डाक्टर क्लार्क साहिब अपने अरदली को बरामदे में कुर्सियाँ लगा देने का हुक्म देकर ख़ुद दूसरे दरवाज़े से अब्दुल्लाह आथम की कोठी पर गए जो निकट ही थी। इस समय में मियां मुहम्मद बख़श साहिब पान्दा भी जंडियाला से पुहुंच गए थे। डाक्टर क्लार्क ने आथम साहिब से जा कर कहा कि

"कादियान से कुछ आदमी जलसा मुनाज़रा की शर्तें और तारीख़ इत्यादि तय करने के लिए आए हैं। आप चल कर तारीख़ तथा शर्तें इत्यादि तय कर लें। आथम साहिब ने कानों पर हाथ धरा और कहा। डाक्टर साहिब अगर एक सौ दूसरे मौलवी होते तो कुछ परवाह न थी। तुमने कहाँ भिड़ों के छत्ता में हाथ डाल दिया। मिर्ज़ा कादियानी का मुक़ाबला करना और उन से निपटना आसान नहीं सख़्त मुश्किल काम है। तुम ने ही यह फ़ित्ना उठाया है। तुम ही इस काम को करो। मैं हरगिज़ नहीं जाऊंगा और न इस में शरीक होऊंगा। डाक्टर साहिब ने कहा। ईसाई क़ौम के तुम ही पहलवान हो। तुम ही यह काम अच्छे तरीके से सरअंजाम दे सकते हो तुम्हारे भरोसा पर मैंने यह काम शुरू किया है और तुम इस से इन्कार करते हो। तुम्हें ज़रूर शामिल होना पड़ेगा। आख़िर पौना घंटा की गुफ़्तगु के बाद हल्ला दिलाकर डाक्टर साहिब आथम साहिब को साथ ही ले आए इस गुफ़्तगु का पता अब्दुल्लाह आथम साहिब के मुसलमान बावर्ची से बाद में हुआ। जब दोनों आए और कुर्सीयों पर बैठे तो आथम साहिब की ज़बान से अपने आप यह शब्द निकले कि "हाय मैं मर गया" इस के बाद शर्तें तय हुईं।"

(रिसाला नूर अहमद, पृष्ठ 24)

जब पादरी आथम साहिब से अमृतसर और बटाला के मौलवियों ने उन की कोठी पर जा कर यह कहा कि तुमने दूसरे उल्मा से बेहस क्यों स्वीकार न की। मिर्ज़ा साहिब से क्यों बेहस पर रजामंदी ज़ाहिर की इन को तो समस्त उल्मा काफ़िर कहते हैं तो उन्होंने इस अवसर को उचित जान कर डाक्टर क्लार्क से कहा कि

"मैंने तो पहले ही कह दिया था कि मिर्ज़ा साहिब से बेहस करना आसान नहीं अब यह अवसर अच्छा हाथ आ गया है। मिर्ज़ा साहिब को जवाब दे दो और उन मौलवियों से बेशक मुबाहसा कर लो कोई हर्ज नहीं।"

(रिसाला नूर अहमद, पृष्ठ 24)

इस पर डाक्टर क्लार्क ने 12 मई 1893 ई को एक इश्तिहार लिखा जो बतौर ज़मीमा "नूर-अफ़शाँ" 12 मई 1893 ई को प्रकाशित हुआ और इस इश्तिहार का प्रकाशन से उन का उद्देश्य सिवाए इस के कुछ न था कि हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम से मुबाहसा न हो। इस उद्देश्य से उन्हों ने जंडियाला के मुसलमानों को आपसे बदज़न करने के लिए मौलवी मुहम्मद हुसैन बटालवी और अन्य उल्मा के कुफ़्र के फत्वों का ज़िक्र किया जो "इशाअतुसुन्ना" मैं प्रकाशित हुए थे और "इशाअतुस्सुन्ना" की ख़रीदारी के बारे में भी ऐलान कर दिया कि

"किताब इशाअतुसुन्ना अन्बुव्वत मौलवी अबू सईद मुहम्मद हुसैन साहिब से मंगवा कर देख सकते हैं। क़ीमत 8 आना है। लाहौर से मिल सकती है।"

इस इश्तिहार में डाक्टर क्लार्क ने जंडियाला के मुसलमानों को सम्बोधित कर के लिखा

"आप एक ऐसे बुज़ुर्ग को बेहस के लिए पेश करते हो जिन को सर्व प्रथम एक मुहम्मदी शख़्स भी विचार करना मुश्किल है आप किन ख़्यालों में मुबतला हो रहे हैं क्या आपने वह फ़त्वा जो कि उलमाए इस्लाम पंजाब तथा हिन्दुस्तान ने मिर्ज़ा ग़ुलाम अहमद साहिब कादियानी के हक़ में प्रकाशित

किए हैं नहीं देखे।

इसी तरह लिखा

"आप अजब अज्ञानता में पड़े हैं कि अब तक इस किताब (अर्थात इशाअतुसुन्ना) को नहीं देखा बहुत ख़ूब आप पर और जंडियाला के मुसलमानों की हिम्मत पर जिसका जनाज़ा भी जायज़ नहीं उसी को आपने पेशवा निर्धारित किया। वाह साहिब वाह। आपकी यह ख़ुश-फ़हमी।

(सच्चाई का इज़्हार, रुहानी ख़ज़ायन, भाग 6 पृष्ठ 73)

मगर जंडियाला के मुसलमानों ने इस इश्तिहार से ज़र्रा हार न दिखाई और मियां मुहम्मद बख़श साहिब ने हज़रात पादरी साहिबों को निहायत दांत तोड़ने वाला जवाब दिया।

"कोई मज़हब मतभेदों से ख़ाली नहीं और ईसाई भी इस से बाहर नहीं और हम ऐसे मौलवियों को ख़ुद फसाद फैलाने वाला समझते हैं जो एक मुसलमान इस्लाम के समर्थक को काफ़िर ठहराते हैं।"

(सच्चाई का इज़हार, रुहानी ख़ज़ायन, भाग 6 पृष्ठ 73-74)

और हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने पादरियों पर स्पष्ट कर दिया कि आपकी तहरीरें और वादा आपकी मंज़ूर की गईं शर्तें हमारे पास हैं। अत: अब आपको या तो बहस करना होगी या हार स्वीकार करना होगी। अगर आप दूसरे मौलवियों से बहस करना चाहते हैं तो पहले मंज़ूर की गई बहस में अपनी हार का अख़बारों में ऐलान करें।

आख़िर में जब पादरियों को भागने की कोई राह दिखाई न दी तो दिल न चाहते हुए उन्हें मुबाहसा का कड़वा प्याला पीना पड़ा। और मुबाहसा डाक्टर क्लार्क की कोठी पर दोनों पक्ष की मन्ज़ूर की गई शर्तों के अनुसार 22 मई 1893 ई से शुरू हो कर 5 जून 1893 ई को ख़त्म हुआ

यह जंग मुक़द्दस जो सलीब को ताड़ने वाले और सलीब के समर्थकों के बीच में हुई। इस में मैदान इस्लाम के पहलवान के हाथ रहा और सलीब का टूटना ऐसे रंग में हुआ कि फिर सलीब जुड़ने के योग्य न रही। मुसलमान ख़ुश हुए और सलीब के समर्थकों के यहाँ मातम पड़ गया

मसीह मौऊद का रुहानी हथियार

हदीसों में आता है कि मसीह मौऊद दज्जाल को अपने हर्बा (बरछी) के एक ही वार से क़त्ल कर देगा और एक दूसरी हदीस में आता है कि वह बाबे लुद्द में क़त्ल करेगा। और लुद्द अरबी ज़बान में अलद्दा का बहुवचन है अर्थात ऐसे लोग जो झगड़ा और मुबाहसा में ग़ालिब आ जाएं। अत: इस में इस तरफ़ भी इशारा पाया जाता है कि मसीह मौऊद और आपके साथी दज्जाल को मुबाहसों के दरवाज़े से क़त्ल करेंगे। अत: यह पेशगोई अपनी पूरी शान से पूरी हुई।

क़ासिरे सलीब हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने मुनाज़रा के आरम्भ में ही एक ऐसा वार किया जिससे आपका शत्रु पादरी अब्दुल्लाह आथम और इस के मददगार आख़िर दम तक आधे मुर्दा की तरह आएं बाएं शाएं तो करते रहे लेकिन वास्तविक जवाब न उन से हो सकता था और न हुआ। आप का वह कामयाब वार यह था। आप ने फ़रमाया

"स्पष्ट हो कि इस बहस में यह निहायत ज़रूरी होगा कि जो हमारी तरफ़ से कोई सवाल हो या डिप्टी अब्दुल्लाह आथम की तरफ़ से कोई जवाब हो वह अपनी तरफ़ से न हो बल्कि अपनी अपनी इल्हामी किताब के हवाला से हो जिसको दूसरा पक्ष हुज्जत समझता हो। और ऐसा ही हर एक दलील और हर एक दावा जो पेश किया जाए वे भी इसी क्रम से हो अत: कोई पक्ष अपनी इस किताब के वर्णन से बाहर न जाए जिसका वर्णन बतौर हुज्जत हो सकता है।"

(जंग मुक़द्दस, रुहानी ख़ज़ाइन, भाग 6 पृष्ठ 89)

सारे मुबाहिसा को आरम्भ से अन्त तक पढ़ जाओ। यह बात स्पष्ट हो जाएगी कि ईसाई मुनाज़िर आख़िर दम तक इस स्तर पर पूरा नहीं उतर सका बल्कि आश्चर्य है कि वह दावा और दलील में भी फ़र्क़ नहीं कर सका। लेकिन हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने क़ुरआन मजीद से जो दावा पेश किया उस की मज़बूती में अक्ली दलीलें भी क़ुरआन मजीद से ही पेश कीं।

पादरियों का वार

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने जब मुनाज़रा में बार-बार ज़िन्दा मज़हब की पहचान का स्तर ताज़ा निशान दिखाना क़रार दिया और यह कि दोनों पक्ष जिस किताब को इल्हामी समझता है इस में मोमिन की वर्णन की गई निशानियों को अपने वजूद में साबित कर दिखाए तो वह पक्का मुसलमान या ईसाई हो सकता है। और ख़ुद निहायत ज़ोर शोर से दावा किया कि क़ुरआन मजीद में ईमान की वर्णन की गई निशानियों को मैं अपने वजूद में साबित कर दिखाऊंगा। और एक साल के अंदर अंदर जिस रंग में अल्लाह तआला चाहेगा ऐसा निशान दिखाऊंगा जिस पर दोनों विरोधी हरगिज़ हरगिज़ क़ादिर न होगा।

पादरी अब्दुल्लाह आथम ने इस दावत को क़बूल करने से भी बचना चाहा। लेकिन कई दिन के ग़ौर तथा फ़िक्र के बाद एक सोची समझी स्कीम के अधीन अपनी तरफ़ एक ऐसा वार किया जिसके बारे में उन्हें यक़ीन था कि इस वार से मुख़ालिफ़ शत्रु ज़रूर हारा जाएगा और हमारे यहाँ फ़तह के ढोल बजेंगे और वह वार यह था कि 26 मई 1893 ई के मुबाहसा के दिन पादरी अब्दुल्लाह आथम ने यह वर्णन लिखवाया कि

"हम मसीही तो पुरानी शिक्षाओं के लिए नए चमत्कारों की कुछ ज़रूरत नहीं देखते और न हम उस का सामर्थ्य अपने अंदर देखते हैं और निशानों का वादा हम से नहीं लेकिन जनाब को इस का बहुत सा गर्व है हम भी चमत्कार देखने से इन्कार नहीं करते।"

"अत: हम ये तीन आदमी पेश करते हैं जिनमें एक अंधा एक टांग कटा और एक गूँगा है इन में से जिस किसी को सही सलामत कर सको कर दो। और जो इस चमत्कार से हम पर फ़र्ज़ वाजिब होगा हम अदा करेंगे आप अपने कहने के अनुसार ख़ुद ऐसे ख़ुदा के मानने वाले हैं जो केवल कहने को क़ादिर नहीं लेकिन वास्तव में क़ादिर है तो वह इन को तंदरुस्त भी कर सकेगा फिर इस में देरी की क्या ज़रूरत है। और ज़रूर आप के कहने के अनुसार सच्चे के साथ होगा ज़रूर होगा। आप अल्लाह तआला की मख़लूक पर रहम फ़रमाऐं शीघ्र फ़रमाई और आपको ख़बर होगी कि आज यह

इस्लाम और जमाअत अहमदिय्या के बारे में किसी भी प्रकार की जानकारी के लिए संपर्क करें

नूरुल इस्लाम नं. (टोल फ्री सेवा) :

1800 3010 2131

(शुक्रवार को छोड़ कर सभी दिन सुबह 9:00 बजे से रात 11:00 बजे तक)

Web.www.alislam.org

www.ahmadiyyamuslimjamaat.in

हदीस नबवी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम

खड़े होकर नमाज़ पढ़ो और अगर खड़े होकर संभव न होतो बैठ कर और अगर बैठ कर भी संभव न हो तो पहलु के बल लेट कर ही सही।

तालिबे दुआ

Sohail Ahmad Nasir and Family

Jamaat Ahmadiyya Adra,Dist: Puruliya. West Bengal

मामला पड़ना है जिस ख़ुदा ने इल्हाम से आपको ख़बर दे दी कि इस जंग के मैदान में तुझे फ़तह है उसने साथ ही यह भी बता दिया होगा कि अंधे तथा अन्य मुसीबत के मारों ने भी पेश होना है अत: सब ईसाई साहिबों तथा मुहम्मिदयों के सामने इसी वक़्त अपना चैलेंज पूरा कीजिए।"

(जंग मुक़द्दस, रुहानी ख़ज़ाइन, भाग 6 पृष्ठ 150-151)

विरोधी पक्ष का यह वार कासिर सलीब के मुक़ाबला में कई समर्थन तथा विरोधियों के सामने बिल्कुल ऐसा ही था जैसा कि हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम के मुक़ाबला में जादूगरों ने अपने सोंटे और रस्सियाँ जो देखने वालों को दौड़ती हुई नज़र आएं फेंक कर अपने ग़ालिब आने का ऐलान कर दिया था जिससे हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम के दिल में भी डर पैदा हुआ कि कहीं मख़लूक़ ख़ुदा पर उन की इस जादू भरी कार्रवाई को देखकर हक़ छुप न जाए। तब अल्लाह तआला ने आपको उसी वक़्त अपना सोंटा फेंकने का इरशाद फ़रमाया और बिशारत दी कि तू ही ग़ालिब और विजयी होगा। लेकिन इस जगह मुबाहसा के सुनने वालों के दिलों में परेशानी हुई हो तो हो और उन्होंने ख़्याल क्या हो कि अब इस वार का क्या जवाब दे सकेंगे। और ईसाई तो दिल में बे-इंतिहा ख़ुशी महसूस कर रहे थे कि हमने ऐसा वार किया है जिसका नतीजा लाज़िमी तौर पर हमारी फ़तह है लेकिन अल्लाह तआला का शेर जो पहले से अपने ज़िन्दा तथा क़ादिर ख़ुदा से इस जंग में फ़तह की बिशारत पा चुका था मुतमइन बैठा था। आपके चेहरा पर परेशानी का कोई असर न था। अलबत्ता व्याकुलता से अपने वक़्त का इन्तज़ार था ताकि पादरियों के धोखा को राख की तरह कर के दिखाए। अत: जब पादरी आथम अपना वर्णन लिखवा चुके और आपके वर्णन लिखवाने का वक़्त आया तो आपने निहायत जलाली रंग में अपना वर्णन लिखवाना शुरू किया। फ़रमाया कि अगर आप सच्चे ईसाई हैं तो बताएं कि

"आपके मज़हब में हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम ने जो निशानियां नजात पाने वाले बंदों अर्थात हक़ीक़ी ईमानदारों की लिखी हैं वे आप में कहाँ मौजूद हैं। जैसे मर्कस16/17 में लिखा है

"और वे जो ईमान लाएँगे उन के साथ ये निशानियां होंगी वे बीमारों पर हाथ रखेंगे तो चंगे हो जाऐंगे"

तो अब मैं अदब के साथ निवेदन करता हूं और अगर इन शब्दों में कुछ कटुता या कड़वाहट हो तो इस की माफ़ी चाहता हूं कि ये तीन बीमार जो आपने पेश किए हैं यह निशान तो विशेष रूप से मसीहियों के लिए हज़रत ईसा क़रार दे चुके हैं और फ़रमाते हैं कि अगर तुम सच्चे ईमानदार हो तो तुम्हारी यही निशानी है कि बीमार पर हाथ रखोगे तो वह चंगा हो जाएगा। अब गुस्ताख़ी माफ़ अगर आप सच्चे ईमानदार होने का दावा करते हैं तो इस वक़्त तीन बीमार आप ही के पेश किए मौजूद हैं। आप उन पर हाथ रख दें अगर वे चंगे हो गए तो हम क़बूल कर लेंगे कि बेशक आप सच्चे ईमानदार और नजात पाने वाले हैं वर्ना कोई क़बूल करने की राह नहीं क्योंकि हज़रत मसीह तो यह भी फ़रमाते हैं कि अगर तुम में राई के दाना बराबर भी ईमान होता तो अगर तुम पहाड़ को कहते कि यहां से चला जा तो वह चला जाता मगर ख़ैर मैं इस वक़्त पहाड़ का एक स्थान से दूसरे स्थान पर जाना तो आप से नहीं चाहता क्योंकि वह हमारी इस जगह से दूर हैं लेकिन यह तो बहुत अच्छा अवसर हो गया कि बीमार तो आपने ही पेश कर दिए अब आप उन पर हाथ रखो और चंगा कर के दिखलाओ। वर्ना एक राई के दाना के बराबर भी ईमान हाथ से जाता रहेगा।

मगर आप पर यह स्पष्ट रहे कि यह इल्ज़ाम हम पर आइद नहीं हो सकता क्योंकि अल्लाह तआला ने क़ुरआन करीम में हमारी यह निशानी नहीं रखी कि विशेष रूप से तुम्हारी यही निशानी है कि जब तुम बीमारों पर हाथ रखोगे तो अच्छे हो जाऐंगे। हाँ यह फ़रमाया है कि मैं अपनी रज़ा और मर्ज़ी के अनुसार तुम्हारी दुआएं क़बूल करूँगा और कम से कम यह कि अगर एक दुआ क़बूल करने के योग्य न हो और मस्लहत इलाही के विरुद्ध हो तो इस में सूचना दी जाएगी। यह कहीं नहीं फ़रमाया कि तुम को यह ताकत दी जाएगी कि तुम इक़तिदारी तौर पर जो चाहो वही कर गुज़रोगे। मगर हज़रत मसीह का तो यह हुक्म मालूम होता है कि वह बीमारों इत्यादि के ठीक करने में अपने मानने वालों को इख़तियार बख़्शते हैं जैसा कि मती 10 अध्याय 1 मैं लिखा है अब यह आपका फ़र्ज़ और आपकी ईमानदारी का ज़रूर निशान हो गया कि आप इन बीमारों को ठीक कर के दिखलाएं या यह स्वीकार करें कि एक राई के दाना के बराबर भी हम में ईमान नहीं और आपका यह अक़ीदा है कि अब भी हज़रत मसीह ज़िन्दा तथा क़य्यूम क़ादिर मुतलक़ आलिमुलग़ैब दिन रात आप के साथ है जो चाहो वही दे सकता है। अत: आप हज़रत मसीह से निवेदन करें कि इन तीनों बीमारों को आपके हाथ रखने से अच्छा कर दें ताकि निशानी ईमानदारी की आप में बाक़ी रह जाए वर्ना यह तो उचित नहीं कि एक तरफ़ तो अह्ले हक़ के साथ बहैसीयत ईसाई होने के मुबाहसा करें और जब सच्चे ईसाई के निशान मांगे जाएं तब कहें कि हम में सामर्थ्य नहीं इस वर्णन से तो आप अपने पर एक इक़बाली डिग्री कराते हैं कि आपका मज़हब इस वक़्त ज़िन्दा मज़हब नहीं है। लेकिन हम जिस तरह पर ख़ुदा तआला ने हमारे सच्चे ईमानदार होने के निशान ठहराए हैं इस निरन्तरता से निशान दिखलाने को तैयार हैं अगर निशान न दिखला सकें तो जो सज़ा चाहें दे दें और जिस तरह की छुरी चाहें हमारे गले में फेर दें।"

(जंग मुक़द्दस,रुहानी ख़ज़ायन, भाग 6 पृष्ठ153-155)

और आपने यह भी फ़रमाया कि ख़ुद हज़रत मसीह इक़तिदारी निशान दिखलाने से असमर्थ रहे जैसा कि मर्कस 8/11,12 में लिखा है

"तब फ़रीसी निकले और इस से हुज्जत कर के अर्थात जिस तरह अब इस वक़्त मुझ से हुज्जत की गई, उसकी परीक्षा के लिए आसमान से कोई निशान चाहा इस ने अपने दिल से आह खींच कर कहा कि इस ज़माना के लोग क्यों निशान चाहते हैं। मैं तुम से सच कहता हूँ कि इस ज़माना के लोगों को कोई निशान दिया न जाएगा फिर इस से भी अजब तरह का एक और स्थान देखिए कि जब मसीह पर खींचे गए तो तब यहूदीयों ने कहा कि उसने औरों को बचाया पर आप को नहीं बचा सकता अगर इस्राईल का बादशाह है तो अब सलीब से उतर आए तो हम इस पर ईमान लाएंगे लेकिन हज़रत मसीह उतर नहीं सके।"

(जंग मुक़द्दस,रुहानी ख़ज़ाइन, भाग 6 पृष्ठ155-156)

इसी तरह फ़रमाया।

"बहस की शर्तों के अनुसार मेरे सम्बोधित इस बारे में डिप्टी अब्दुल्लाह आथम साहिब हैं। साहिब महोदय को चाहिए कि इन्जील शरीफ़ की वर्णन किए गए निसानों के अनुसार सच्चा ईमानदार होने की निशानियां अपने वजूद में साबित करें और इस तरफ़ मेरे पर लाज़िम होगा कि मैं सच्चा ईमानदार होने की निशानियां क़ुरआन करीम के दृष्टि से अपने वजूद में साबित करूँ मगर इस जगह याद रहे कि क़ुरआन करीम हमें सामर्थय नहीं बख़्शता बल्कि ऐसे कलिमा से हमारे शरीर पर कपकपी आती है हम नहीं जानते कि वह किस किस्म का निशान दिखलाएगा वही ख़ुदा है सिवा उस के और कोई ख़ुदा नहीं हाँ यह हमारी तरफ़ से इस बात का मज़बूत वादा है जैसा कि अल्लाह तआला ने मेरे पर प्रकट कर दिया है कि ज़रूर मुक़ाबला के वक़्त मैं फ़तह पाऊंगा मगर यह मालूम नहीं कि ख़ुदा तआला किस तौर से निशान दिखलाएगा वास्तविक लक्ष्य तो यह है कि निशान ऐसा हो कि इन्सानी ताक़तों से बढ़कर हो।"

(जंग मुक़द्दस, रुहानी ख़ज़ायन, भाग 6 पृष्ठ157)

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम का यह जवाब लिखवाना था कि पादरियों ने इन पेश किए बीमारों को मज्लिस से ऐसे तौर पर ग़ायब कर दिया कि मानो उन्हें ज़मीन निगल गई और पादरियों की यह धोखा देने वाली कार्रवाई बिलकुल व्यर्थ और बेफ़ाइदा गई। और हमेशा के लिए उन के माथे पर कलंक का टीका साबित हुई और ख़ुदा तआला के पहलवान क़ासिरे सलीब की स्पष्ट विजय का कारण बनी।

निशान

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की अल्लाह तआला की तरफ निशान दिखाने के लिए व्याकुलता तथा दुआएं अन्त में स्वीकारता को पहुँचीं

और अल्लाह तआला ने विरोद्धी पक्ष के बारे में आपको इस निशान से सूचना दी जो इस भाग के पृष्ठ291- 292 पर लिखी है

अत: यह जंग मुक़द्दस जो दज्जाली गिरोह और मसीह मौऊद के मध्य हुई उसने सलीबी मज़हब को टुकड़े टुकड़े कर दिया और दलीलों तथा तर्कों की दृष्टि से दज्जाल हमेशा के लिए क़त्ल कर दिया गया।

इस मुबाहसा के परिणाम

इस मुबाहसा के अच्छे नतीजे मुबाहसा के दिनों में ही ज़ाहिर होने शुरू हो गए। अत: मुबाहसा के दिनों मैं मियां नबी-बख़्श रफ़ू करने वाले सौदागर पश्मीना अमृतसर और हमारे उस्ताद माहिर फ़िक़्ह हदीस आलिम बाअमल हज़रत क़ाज़ी अमीर हुसैन रज़ि हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के हाथ पर बैअत कर के सिलसिला अहमदिया में दाख़िल हो गए। क़ाज़ी साहिब जो इन दिनों मदर्रसा इस्लामीया अमृतसर में उस्ताद थे उन के अहमदी होने से मौलवियों के घर में शोर बरपा हो गया।

(रिसाला नूर अहमद, पृष्ठ 30)

इसी तरह कर्नल अलताफ़ अली ख़ान साहिब रईस कपूरथला जो ईसाइयत धारण कर चुके थे और मुबाहसा के समय ईसाइयों की तरफ़ बैठे थे इस्लाम ले आए (रिव्यू आफ़ रेलीजिंज़ उर्दू जनवरी1940 ई) और ईसाई पादरियों को यह मालूम हो गया कि उनके मुकाबला में हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम इस्लाम का एक बेनज़ीर पहलवान है और जो इलम कलाम उनके मज़हब के रद्द और इस्लाम के समर्थन में उसने पैदा किया है वह एक ऐसा तरीका है जिसके वार से कसरे सलीब का होना एक यक़ीनी बात है। अत: इस महान मुबाहसा में प्रमुख पादरियों की हार और हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने जिस रंग में इस्लाम को ज़िन्दा मज़हब और आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को ज़िन्दा नबी और क़ुरआन मजीद को ज़िन्दा किताब के तौर पर पेश किया वह ऐसी बातें ने थीं जिनसे ईसाई दुनिया प्रभावित न होती। अत: इंग्लिस्तान जिसकी कई मिशनरी सोसायटियां पंजाब और हिन्दुस्तान में काम कर रही थीं प्रभावित हुए बग़ैर न रह सका। अत:1894 ई में दुनिया-भर के पादरियों की जो महान कान्फ्रैंस लन्दन में आयोजित हुई उस के एक इज्लास की सदारत करते हुए लार्ड बिशप आफ़ गलोस्टर रेवरनड चार्ल्स जान एलीकोट ने कहा।

"इस्लाम में एक नई हरकत के चिन्ह स्पष्ट हैं। मुझे उन लोगों ने जो तजुर्बा वाले हैं बताया है कि हिन्दुस्तान की बर्तानवी साम्राज्य में एक नई तरीके का इस्लाम हमारे सामने आ रहा है और इस द्वीप में भी कहीं कहीं उस के निशान नज़र आ रहे हैं यह उन बिदअतों का सख़्त मुख़ालिफ़ है जिनकी बुनियाद पर मुहम्मद (सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम) का मज़हब हमारी निगाह में नफरत योग्य क़रार पाता है। इस नए इस्लाम की वजह से मुहम्मद (सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम) को फिर वही पहली सी महानता प्राप्त होती रही जा है। ये नए परिवर्तन आसानी से शनाख़्त किए जा सकते हैं। फिर यह नया इस्लाम अपनी नौईयत में रक्षात्मक ही नहीं बल्कि आक्रामक हैसियत वाला भी है। अफ़सोस है तो इस बात का कि हम से कई ज़हन उस की तरफ़ झुक रहे हैं।"

(दी आफेशल रिपोर्ट आफ़ दी मिशनरी कान्फ्रैंस आफ़ दी कमनोयन 1894 पृष्ठ 64)

अत: हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के दावा पर अभी चार साल ही गुज़रे थे कि पादरियों के दिलों पर आप का रौब छा गया। और मसीही दुनिया को महसूस हो गया कि इस्लाम के ग़लबा और ईसाईयत की शिकस्त का वक़्त आ पहुंचा

☆ ☆ ☆

पृष्ठ 17 का शेष

जीवनयापन करता है और इस आदर-सम्मान और प्रसिद्धि के बावजूद जो उसे अमरीका और यूरोप में प्राप्त थी ख़ुदा तआला की कृपा से यह हुआ कि उसके मुकाबले पर मेरे मुबाहला का लेख अमरीका के बड़े-बड़े प्रसिद्ध दैनिक अखबारों ने प्रकाशित कर दिया और सम्पूर्ण अमरीका एवं यूरोप में प्रसिद्ध कर दिया। फिर इस सार्वजनिक प्रकाशन के पश्चात् उसके बारे में भविष्यवाणी में जिस विनाश और मृत्यु की सूचना दी गई थी वह ऐसी स्पष्टता से पूरी हुई कि जिससे बढ़कर सर्वांगपूर्ण तौर पर प्रकट होने की कल्पना नहीं की जा सकती। उसके जीवन के प्रत्येक पहलू पर आपदा पड़ी। उसका बेईमान होना सिद्ध हुआ, वह मदिरा को अपनी शिक्षा में अवैध ठहराता था किन्तु उसका मदिरापान करना सिद्ध हो गया, वह अपने बसाए हुए शहर सैहून से बड़ी उत्कंठा के साथ निकाला गया जिसे उसने कई लाख रुपए व्यय करके बसाया था तथा सात करोड़ नकद रूप्या में से जो उस के कब्जा में था उस को मना कर दिया गया। और उस की पत्नी और उस का बेटा उस के दुश्मन हो गए। और उस के बाप ने इश्तिहार दिया कि वह वलदुज़्ज़ना है। अत: इस तरह पर वह क़ौम में वलदुज़्ज़ना साबित हुआ। और यह दावा कि मैं बीमारों को मोजिज़ा से अच्छा करता हूँ। यह समस्त बातें उस की केवल झूठी साबित हुई और हर एक अपमान उस को नसीब हुआ और अन्त में इस पर फ़ालिज गिरा और एक तख़्ता की तरह कुछ आदमी उस को उठा कर ले जाते रहे और फिर बहुत ग़मों के कारण पागल हो गया और होश ठीक न रहे। और यह दावा उस का कि मेरी अभी बड़ी उम्र है और मैं दिन प्रतिदिन जवान होता जाता हूँ और लोग बुढे होते जाते हैं केवल झूठ साबित हुआ। अन्त में मार्च 1907 ई के पहले सप्ताह में ही बड़ी हसरत और दर्द और दुख के साथ मर गया।

अब ज़ाहिर है कि इस से बढ़कर और क्या चमत्कार होगा चूँकि मेरा असल काम कसरे सलीब है अत: उसके मरने से एक बड़ा हिस्सा सलीब का टूट गया। क्योंकि वह समस्त दुनिया से अव्वल दर्जा पर सलीब का समर्थक था जो पैग़म्बर होने का दावा करता था और कहता था कि मेरी दुआ से समस्त मुस्लमान हलाक हो जाएंगे और इस्लाम नाबूद हो जाएगा और ख़ाना काबा वीरान हो जाएगा। अत: ख़ुदा तआला ने मेरे हाथ पर इस को हलाक किया। मैं जानता हूँ कि इस की मौत से पेशगोई सूअर के क़तल वाली बड़ी सफाई से पूरी हो गई। क्योंकि ऐसे शख़्स से ज़्यादा ख़तरनाक कौन हो सकता है कि जिसने झूठे तौर पर पैग़म्बरी का दावा किया और ख़िंज़ीर (सूअर) की तरह झूठ की गन्दगी खाई। और जैसा कि वह ख़ुद लिखता है इस के साथ एक लाख के क़रीब ऐसे लोग हो गए थे जो बड़े मालदार थे बल्कि सच यह है कि मुसैलमा कज़्ज़ाब और असवद अनसी का वजूद उस के मुक़ाबला पर कुछ भी चीज़ न था। न उस की तरह शौहरत उन की थी और ना उस की तरह करोड़ों रुपया के वे मालिक थे अत: मैं कसम खा सकता हूँ कि यह वही ख़िंज़ीर था जिसके क़तल की आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने ख़बर दी थी कि मसीह मौऊद के हाथ पर मारा जाएगा। अगर में इस को मुबाहला के लिए न बुलाता। और अगर में इस पर बद-दुआ ना करता और इस की हलाकत की पेशगोई प्रकाशित न करता तो इस का मरना इस्लाम की सच्चाई के लिए कोई दलील ना ठहरता लेकिन चूँकि मैंने सैंकड़ों अख़बारों में पहले से प्रकाशित करा दिया था कि वह मेरी ज़िन्दगी में ही हलाक होगा मैं मसीह मौऊद हूँ और डोई कज़्ज़ाब है और बार-बार लिखा कि इस पर यह दलील है कि वह मेरी ज़िन्दगी में ज़िल्लत और हसरत के साथ हलाक हो जाएगा अत: वह मेरी ज़िन्दगी में ही हलाक हो गया। इस से ज़्यादा खुला खुला मोजिज़ा जो नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की पेशगोई को सच्चा करता है और क्या होगा? अब वही इस से इनकार करेगा जो सच्चाई का दुश्मन होगा।

والسّلام علیٰ من اتّبع الهُدٰی

☆ ☆ ☆

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की सच्चाई दुश्मनों की हलाकत की रोशनी में

सय्यदना हज़रत अक़दस मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की किताब हकीकतुल वह्य रूहानी ख़ज़ायन भाग 22 से आप दो मुख़ालफ़ीन का इबरत वाला अन्जाम प्रस्तुत है। ये दोनों विरोधी आपकी पेशगोइयों के अनुसार हलाक हुए। उनकी हलाकत और उनका इबरतनाक अंजाम हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की सच्चाई का महान निशान हैं।

चमकता हुआ निशान
बाबू इलाही बख़्श एकाऊंटैंट पैंशनर लाहौर
झूठा मर गया

मुंशी इलाही बख़्श एकाऊंटैंट लाहौर हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के मुरीदों में से था। इख़लास तथा वफ़ा में बहुत बढ़ा हुआ था। सय्यदना हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने जब 1889 ई मैं बैअत के द्वारा जमाअत की बुनियाद रखी और अपने मुरीदों को बैअत में दाख़िल होने के लिए कहा तो अचानक इलाही बख़्श बिगड़ गया। कादियान आकर इस ने हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम को बड़ी बेबाकी से अपने ख़्वाब और इल्हाम सुनाए। और कहा कि एक ख़्वाब में मैं आपसे कहता हूँ कि मैं आपकी बैअत क्यों करूँ आप मेरी बैअत करें। सय्यदना हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने अपने इस पुराने दोस्त को हलाक़त से बचाने के लिए निहायत महान किताब ज़रूरतुल इमाम लिखी और इस में हर तरह से उन्हें समझाने की कोशिश की। आपने बैअत और इलहाम की हक़ीक़त पर भी बहुत मआरिफ़ वाली बहस फ़रमाई। इस किताब से हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के कुछ उपदेश पेश हैं। हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने इलाही बख़्श को फ़रमाया :

"मेरे प्रिय ! हम तो अध्यात्म, सच्चाइयों और आसमानी बरकतों के भूखे और प्यासे हैं और एक सागर भी पीकर तृप्त नहीं हो सकते। अत: अगर हमें कोई अपनी दासता में लेना चाहे तो यह बहुत आसान तरीक़ा है कि बैअत के आशय और उसकी वास्तविक फ़िलास्फ़ी को ध्यान में रखकर यह ख़रीद-फ़रोख़्त हम से कर ले और अगर उसके पास ऐसी सच्चाइयाँ, अध्यात्म ज्ञान और आसमानी बरकतें हों जो हमें नहीं दी गयीं और या उस पर वे क़ुरआनी रहस्य ज्ञान खोले गए हों जो हम पर नहीं खोले गए, तो बिस्मिल्लाह वह बुज़ुर्ग (वली, महात्मा) हमारी ग़ुलामी और आज्ञापालन का हाथ लेवे और अध्यात्म ज्ञान और क़ुरआन की रहस्यमयी सच्चाइयाँ और आसमानी बरकतें हमें दे। मैं तो अधिक कष्ट देना ही नहीं चाहता हमारे मुल्हम (ईश्वाणी पाने वाला) मित्र किसी एक समारोह में सूर: इख़्लास के ही सच्चे रहस्य ज्ञान बयान करें। हज़ार गुना बढ़कर हम बयान न कर सकें तो हम उनके ग़ुलाम हैं।

(ज़रूरतुल इमाम रूहानी ख़ज़ायन भाग 13 पृष्ठ 498)

"मैं कसम खाकर कहता हूँ कि हमारे विद्वान मित्र मौलवी अब्दुल करीम साहिब उपदेश के समय जितनी क़ुरआन शरीफ़ की सच्चाइयाँ और रहस्य ज्ञान वर्णन करते हैं मुझे कदापि उम्मीद नहीं कि उनका हज़ारवाँ भाग भी मेरे प्रिय मित्र के मुँह से निकल सके ।

(वही पृष्ठ 498)

हमारी जमाअत में और मेरे बैअत किए हुए सदाचारियों में एक व्यक्ति हैं जो महान विद्वान हैं और वह मौलवी हकीम हाफ़िज़ हाजी हरमैन नूरुद्दीन साहब हैं जो मानो सारी दुनियाँ की तफ्सीरें अपने पास रखते हैं और इसी तरह उनके दिल में अत्यधिक क़ुरआन करीम के गूढ़ज्ञान का भण्डार है। अगर आपको बैअत लेने की विशेषता दी गयी है तो क़ुरआन का एक सिपारा उन्हीं को सच्चे गूढ़ रहस्यों के साथ पढ़ा दें। ये लोग दीवाने तो नहीं कि उन्होंने मुझ से ही बैअत कर ली और दूसरे मुल्हमों को छोड़ दिया ।

(वही पृष्ठ 500)

"अगर वह अपनी इल्हामी ताक़त दिखलाने से पहले मौलवी हकीम नूरुद्दीन साहब को क़ुरआन जानने का नमूना दिखला दें और उस चमत्कार की चमकार से नूरुद्दीन जैसे क़ुरआन के प्रेमी से बैअत लें तो फिर मैं और मेरी सारी जमाअत आप पर न्योछावर है।"

(वही पृष्ठ 500)

आप फ़रमाया

"अगर वह अपनी इल्हामी ताक़त से पहले मौलवी साहिब महोदय को क़ुरआन जानने का नमूना दिखलाए और इस आदत से हट कर चम्कार से नूरुद्दीन जैसे आशिक़ क़ुरआन से बैअत लें तो फिर मैं और मेरी समस्त जमाअत आप पर क़ुर्बान है।"

(वही पृष्ठ 501)

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम :"चमकता हुआ निशान बाबू इलाही बख़्श एकाऊंटैंट पैंशनर लाहौर झूठा मूसा मर गया" के नाम से जमाअत को इस की हलाकत की ख़बर देते हुए फ़रमाते हैं

"पाठको आप लोगों को मालूम होगा कि एक व्यक्ति इलाही बख़्श नामक जो लाहौर में इकोंटेनट था वह इस ज़माना में जब कि मैंने ख़ुदा तआला से वह्य पाकर इस बात को ज़ाहिर किया कि मैं मसीह मौऊद हूँ मुझ से नाराज़ हो कर इस बात का दावा करने वाला हुआ कि मैं मूसा हूँ। इस बात का विस्तार यह है कि लम्बे समय से वर्णन किया गया इलाही बख़्श मेरे साथ बैअत का सम्बन्ध रखता था और कई बार कादियान में आया करता था और मुझ को एक सच्चा मुल्हम ख़ुदा तआला की तरफ़ से जानता था और सेवा करता था। कई बार ऐसा संयोग हुआ कि सुबह के वक़्त नमाज़ के बाद अमृतसर मैं सोता था और मेरे मुँह पर चादर थी। तब एक शख़्स आया और इस ने मेरे पांव दबाने शुरू कर दिए। जब मैंने चादर उठाकर देखा तो वही इलाही बख़्श था। इस तहरीर से उद्देश्य यह है कि इस हद तक उस का इख़लास पहुंच गया था कि किसी प्रकार की सेवा से वह लज्जा और शर्म नहीं रखता था और बहुत विनम्रता से मामूली ख़िदमत करने वालों की तरह अपने आप को सोचता था और आर्थिक सेवा में भी यथा अवसर पीछे न रहता था। जब तक ख़ुदा ने चाहा वह इसी मुख़लिसाना हालत में रहा और मुझ को बड़ी उम्मीद थी कि वह अपने इख़लास में बहुत तरक़्क़ी करेगा और जब मैं कादियान से किसी कारण से लुधियाना या अंबाला या किसी और जगह जाता था तो गुंजाइश और फ़ुर्सत निकलने के इसी जगह पहुंचता था और प्राय उस का साथी मुंशी अब्दुल हक़ ऐकाउन्टेन्ट भी इस के साथ होता था। फिर उस को कुछ समय के बाद यह विचार पैदा हुआ कि मुझ को इल्हाम होता है और यही एक ज़हरीला बीज था कि क़ज़ा तथा क़दर ने इस में बो दिया। फिर उस के बाद अंदर ही अंदर उसकी मुख़लिसाना हालत में कुछ परिवर्तन होता गया और फिर जिस ज़माना में ख़ुदा तआला ने मुझे लोगों से बैअत लेने के लिए मामूर फ़रमाया और लगभग चालीस आदमी या कुछ अधिक बैअत में दाख़िल हुए और आम तौर पर ख़ुदा तआला के हुक्म के अनुसार हर एक को सुनाया कि जो व्यक्ति इरादत रखता है वह बैअत में दाख़िल हो तब इस बात को सुनते ही इलाही बख़्श का दिल बिगड़ गया और वह कुछ समय के बाद अपने दोस्त मुंशी अब्दुल हक़ के कादियान में मेरे पास आया इस उद्देश्य से कि ताकि अपने इल्हाम सुनाए और अब की बार उस की मिज़ाज में इतनी सख़्ती हो गई थी कि मानो वह और ही

था इलाही बख़्श नहीं था। इस ने बेबाकी से अपने इल्हाम सुनाने शुरू किए और वह एक छोटी सी कापी में लिखे हुए थे जो उस की जेब में थी। उन में से एक उस ने यह सुनाया कि ख़्वाब में मैंने देखा है कि आप मुझे कहते हैं कि मेरी बैअत करो और मैंने जवाब दिया कि मैं नहीं करता बल्कि तुम मेरी बैअत करो। इस ख़्वाब की वजह से वह सिर से पैर तक अंहकार और गर्व से भर गया और यह समझा कि मैं ऐसा बुज़ुर्ग हूँ कि मुझे बैअत की ज़रूरत नहीं बल्कि उन को मेरी बैअत करनी चाहिए मगर दरअसल यह शैतानी शंका थी कि इस की ठोकर का कारण हुआ। बात यह है कि जब इन्सान के दिल में अंहकार और इन्कार छुपा होता है तो वही इनकार हदीसुन्नफस की तरह ख़्वाब में आ जाता है और एक नादान समझता है कि यह ख़ुदा की तरफ़ से है हालाँकि वह इन्कार केवल अपने छुपे हुए विचारों से पैदा होता है ख़ुदा से इस को कुछ सम्बन्ध नहीं होता। अत: सैंकड़ों जाहिल केवल इस हदीसुन्नफस से हलाक हो जाते हैं। अत: इलाही बख़्श ने निहायत शोख़ी और बेबाकी से वह ख़्वाब मुझ को सुनाई और मुझको उस की नादानी पर अफ़सोस आता था क्योंकि मैं निसन्देह जानता था कि जो कुछ वह सुना रहा है वह सिर्फ़ हदीसुन्नफस है। मगर चूँकि मैंने उस के दिल में अंहकार महसूस किया और गर्व और अपने आप को दिखाने के निशान देखे और इस की बातों में तेज़ी पाई गई इसलिए मैंने उस को नसीहत के तौर पर कुछ कहना व्यर्थ समझा। यह अफ़सोस का स्थान है कि अक्सर लोग हर एक बात को जो ग़नूदगी की हालत में इन की ज़बान पर जारी होती है ख़ुदा का कलाम क़रार देते हैं और इस तरह पर आयत لَا تَقْفُ مَا لَيْسَ لَكَ بِهٖ عِلْمٌ के नीचे अपने आप को दाख़िल कर देते हैं और याद रखना चाहिए कि अगर कोई कलाम ज़बान पर जारी हो और अल्लाह तआला के कथन और रसूल के कथन से विरोधी भी न हो तब भी वह ख़ुदा का कलाम नहीं कहला सकता जब तक ख़ुदा तआला का कर्म इस पर गवाही न दे क्योंकि शैतान लईन जो इन्सान का दुश्मन है जिस तरह और तरीक़ों से इन्सान को हलाक करना चाहता है इसी तरह इस पथभ्रष्ट का एक यह भी तरीक़ा है कि अपनी बातें इन्सान के दिल में डाल कर उस को यह यक़ीन दिलाता है कि मानो वह ख़ुदा का कलाम है और आख़िर अंजाम ऐसे शख़्स का हलाकत है।

अत: जिस पर कोई कलाम नाज़िल हो जब तक तीन निशानियां इस में न पाई जाएं उस को ख़ुदा का कलाम कहना अपने आप को हलाकत में डालना है।

प्रथम वह कलाम क़ुरआन शरीफ़ से मुख़ालिफ़ और टकराने वाला न हो मगर यह निशानी बिना तीसरी निशानी के जो नीचे लिखी जाएगी कमज़ोर है बल्कि अगर तीसरी निशानी न हो तो केवल इस निशानी से कुछ भी प्रमाणित नहीं हो सकता।

द्वितीय वह कलाम ऐसे शख़्स पर नाज़िल हो जिसका नफ़्स अच्छी तरह पवित्र हो चुका हो और वह इन फ़ानियों की जमाअत में दाख़िल हो जो पूर्ण रूप से नफ़्सानी भावनाओं से अलग हो गए हैं और उन के नफ़्स पर एक ऐसी मौत छा गई है जिसके द्वारा वह ख़ुदा से क़रीब और शैतान से दूर जा पड़े हैं क्योंकि जो शख़्स जिसके क़रीब है उसी की आवाज़ सुनता है अत: जो शैतान के क़रीब है वह शैतान की आवाज़ सुनता है और जो ख़ुदा से क़रीब है वह ख़ुदा की आवाज़ सुनता है और इंतिहाई कोशिश इन्सान की नफ़्स की पवित्रता है और इस पर समस्त सुलूक समाप्त हो जाता है और दूसरे शब्दों में यह एक मौत है जो समस्त अंदरूनी गन्दगियों को जला देती है। फिर जब इन्सान अपना सुलूक ख़त्म कर चुकता है तो अल्लाह तआला के तसर्रुफ़ात की नौबत आती है तब ख़ुदा अपने इस बंदा को जो सल्ब जज़्बात नफ़्सानीया (नफस की बुरी भावनाओं की समाप्ति) से फ़ना के स्तर तक पहुंच चुका है। मार्फ़त और मुहब्बत की ज़िन्दगी से दुबारा ज़िन्दा करता है और अपने आदत से हट कर निशानों से रुहानी आश्चर्यों की इस को सैर कराता है और व्यक्तिगत मुहब्बत की छुपी हुई कशिश उस के दिल में भर देता है जिसको दुनिया समझ नहीं सकती इस हालत में कहा जाता है कि इस को नई ज़िन्दगी मिल गई जिसके बाद मृत्यु नहीं।

अत: यह नई हयात कामिल मार्फ़त और कामिल मुहब्बत से मिलती है और कामिल मार्फ़त ख़ुदा के आदत से हट कर निशानों से हासिल होती है और जब इन्सान इस हद तक पहुंच जाता है तब उस को ख़ुदा का सच्चा मुकालमा मुख़ातबा नसीब होता है। मगर यह निशानियां भी बिना तीसरे दर्जा की निशानी के सन्तोष जनक नहीं क्योंकि सम्पूर्ण तज़किया एक छुपी हुई बात है इस लिए हर एक फज़ूल कहने वाला ऐसा दावा कर सकता है।

तीसरी निशानी सच्चा इल्हाम पाने वाले की यह है कि जिस कलाम को वह ख़ुदा की तरफ़ सम्बन्धित करता है ख़ुदा के निरन्तर कर्म इस पर गवाही दें अर्थात इस क़दर उस के समर्थन में निशान प्रकट हूँ कि अक्ल सलीम इस बात को समझे कि बावजूद इतने निशानों के फिर भी वह ख़ुदा का कलाम नहीं और यह निशानी वास्तव में समस्त निशानों से बढ़कर है क्योंकि मुम्किन है कि एक कलाम जो किसी की ज़बान पर जारी हो या किसी ने इलहाम के दावा के रूप में पेश किया हो वह अपने अर्थों की दृष्टि से क़ुरआन शरीफ़ के वर्णन से विपरीत न हो बल्कि अनुसार हो मगर फिर भी वह किसी मुफ़्तरी का इफ़्तिरा हो क्योंकि एक अक़लमंद जो मुसलमान है मगर मुफ़्तरी है ज़रूर इस बात का लिहाज़ रख लेगा कि क़ुरआन शरीफ़ के मुख़ालिफ़ कोई कलाम इलहाम के दावा में पेश न करे वर्ना जाने अनचाहे लोगों के एतराज़ात का निशाना हो जाएगा। और इसी तरह यह भी संभव है कि वह कलाम हदीसुन्नफस हो अर्थात नफ़्स की तरफ़ से एक कलिमा ज़बान पर जारी हो जैसे अक्सर बच्चे जो दिन को किताबें पढ़ते हैं रात को कई बार वह्य कलिमात उनकी ज़बान पर जारी हो जाते हैं। अत: किसी कलिमा का जो इलहाम के रूप दावा में पेश किया गया है क़ुरआन शरीफ़ से अनुसार होना इस बात पर क़तई दलील नहीं है कि वह ज़रूर ख़ुदा का कलाम है। क्या मुम्किन नहीं कि एक कलाम अपने अर्थों की दृष्टि से ख़ुदा के कलाम के विरोधी भी न हो और फिर वह किसी मुफ़्तरी का इफ़्तिरा भी हो क्योंकि एक मुफ़्तरी बड़ी आसानी से यह कार्रवाई कर सकता है कि वह क़ुरआन शरीफ़ की शिक्षा के अनुसार एक कलाम पेश करे और कहे कि यह ख़ुदा का कलाम है जो मेरे पर नाज़िल हुआ है और या ऐसा कलाम हदीसुन्नफस ठहर सकता है या शैतानी कलाम हो सकता है।

ऐसा ही यह दूसरी शर्त भी अर्थात यह कि जो इलहाम का दावा करे वह नफस को पवित्र करने वाला हो सन्तोष योग्य नहीं बल्कि एक छुपी हुई बात है और कई नापाक तबीयत वाले लोग इस बात का दावा कर सकते हैं कि हमारा नफ़्स पवित्र हो चुका है और हम ख़ुदा से सच्ची मुहब्बत रखते हैं। अत: यह बात भी कोई आसान बात नहीं कि इस में शीघ्र सच्चे और झूठे में फ़ैसला किया जाए यही वजह है कि कई ख़बीसुन्नफ लोगों ने इन नेकों पर जो पवित्र नफ़्स वाले थे अपवित्र आरोप लगाए हैं जैसा कि आजकल के पादरी हमारे सय्यद मौला आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम पर आरोप लगाते हैं और नऊज़ बिल्लाह कहते हैं कि आप नफ़्सानी शहवात का अनुकरण करते थे जैसा कि इन के हज़ारों रिसालों और अख़बारों और किताबों में ऐसे आरोप पाओगे। ऐसा ही यहूदी लोग हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम पर तरह तरह के आरोप लगाते हैं। अत: थोड़ा समय हुआ है कि मैंने एक यहूदी की किताब देखी जिसमें न सिर्फ यह नापाक एतराज़ था कि नऊज़ बिल्लाह हज़रत ईसा का जन्म नाजायज़ तौर पर है बल्कि आपके चाल चलन पर भी निहायत गंदे एतराज़ किए थे और जो आपकी ख़िदमत में कई औरतें रहती थीं बहुत बुरे तरीका में उनका ज़िक्र किया था। अत: जबकि गन्दी तबीयत वाले दुश्मनों ने ऐसे नेक फ़ितरत और पवित्र लोगों को शहवत के पुजारी लोग क़रार दिया और तज़किया नफ़्स से केवल ख़ाली समझा तो इस से हर एक शख़्स मालूम कर सकता है कि तज़किया नफ़्स का मर्तबा दुश्मनों पर ज़ाहिर हो जाना कितना मुश्किल है अत: आर्या लोग ख़ुदा तआला के समस्त नबियों को केवल मक्कार और शहवत के पुजारी क़रार देते हैं और उनका दौर मकर तथा फ़रेब का दौर ठहराते हैं।

लेकिन यह तीसरी निशानी कि इलहाम और वह्य के साथ जो एक कथन है इस के साथ ख़ुदा का एक कर्म भी हो। यह ऐसी कामिल निशानी है जो

कोई उस को तोड़ नहीं सकता। यही निशानी है जिससे ख़ुदा के सच्चे नबी झूठों पर ग़ालिब आते रहे हैं क्योंकि जो आदमी दावा करे कि मेरे पर ख़ुदा का कलाम नाज़िल होता है फिर उस के साथ सैंकड़ों निशान प्रकट हों और हज़ारों किस्म के समर्थन और इलाही सहायता शामिल हो और उसके दुश्मनों पर ख़ुदा के खुले खुले हमले हों फिर किस की मजाल है कि ऐसे शख़्स को झूठा कह सके। मगर अफ़सोस कि दुनिया में बहुत से ऐसे लोग भी हैं कि इस बला में फंस जाते हैं कि कोई हदीसुन्नफस या शैतानी शंका उन को पेश आ जाती है तो इस को ख़ुदा तआला का कलाम समझ लेते हैं और व्यावहारिक गवाही की कुछ परवाह नहीं रखते।

हां यह भी संभव है कि किसी को कभी आदत से हट कर कोई सच्ची ख़्वाब आ जाए या सच्चा इलहाम हो जाए मगर वह सिर्फ इतने से अल्लाह तआला की तरफ से मामूर नहीं कहला सकता और न यह कह सकते हैं कि वह नफ़सानी अन्धेरों से पवित्र है बल्कि इतनी रोया और इलहाम में लगभग सारी दुनिया सम्मिलित है और यह कुछ भी चीज़ नहीं और यह बात कभी कभी ख़्वाब या इलहाम होने का केवल इस लिए इन्सानों की फ़ितरत में रखी गई है ताकि एक अक़लमंद इन्सान ख़ुदा के नेक रसूलों पर कुधारणा न कर सके और समझ सके कि वह्य और इलहाम का हर एक इन्सान की फ़ितरत में बीज दाख़िल है फिर उस की सम्पूर्ण तरक़्क़ी से इन्कार करना अज्ञानता है

लेकिन वे लोग जो ख़ुदा के नज़दीक मुल्हम या मुकल्लमु कहलाते हैं और मुकालमा और मुख़ातबा का सौभाग्य रखते हैं और लोगों को बुलाने के लिए मबऊस होते हैं उनके समर्थन में ख़ुदा तआला के निशान बारिश की तरह बरसते हैं और दुनिया उनका मुक़ाबला नहीं कर सकती और अल्लाह तआला का व्यवहार अपनी प्रचुरता के साथ गवाही देता है कि जो कलाम वह प्रस्तुत करते हैं वह कलाम इलाही है। अगर इलहाम का दावा करने वाले इस निशानों को समक्ष रखते तो वह इस फ़ित्ना से बच जाते

ऐसा ही अगर इलाही बख़्श इस मामला में कुछ सोचता कि इस के समर्थन में ख़ुदा तआला के निशान कितने प्रकट हुए और कितना उस की सहायता और मदद हुई और आम लोगों की तुलना में उस को क्या अन्तर बख़्शा गया है तो वह इस बला में पीड़ित न होता। अब बड़े अफ़सोस से कहना पड़ता है कि वह अपनी मौत के बाद एक अम्बार झूठ और इफ़्तिरा का छोड़ गया। मेरे बारे में वह यह इलहाम पेश करता था कि मेरी ज़िन्दगी में यह शख़्स ताऊन से हलाक होगा और इस की समस्त जमाअत बिघर जाएगी अत: इस ने देख लिया कि वह ख़ुद ताऊन से हलाक हुआ और इस का दावा था कि वह नहीं मरेगा जब तक वह मेरा लाश न देख ले मगर इस ने अपनी आंख से ख़ुद देख लिया कि इस के झूठे इल्हाम के बाद कई लाख तक मेरी जमाअत पहुंच गई। जब ऐसे इलहाम इस ने प्रकाशित करने शुरू किए उस वक़्त तो मेरी जमाअत चालीस इन्सान से ज़्यादा अधिक थी और बाद में चार लाख तक पहुंच गई और वह नहीं मरा जब तक इस ने अपनी असफलता हर एक पहलू से न देख ली और मेरी कामयाबी न देख ली और वह अपने झूठे इल्हामों के माध्यम से हर एक मुक़द्दमा में जो मेरे पर दायर होता था यही ख़्याल करता था कि मैं सज़ा पाकर दर्दनाक अज़ाब में पीड़ित हो जाऊंगा। और ऐसे ही इस को इल्हाम होते थे जिनको वह अपने दोस्तों में प्रकाशित करता था मगर ख़ुदा तआला हर एक मुक़द्दमा में इज़्ज़त के साथ मुझे बरी करता गया। और सख़्त असफलता के साथ उस को मौत आई। अत: इस में कुछ शक नहीं कि जब उस को ताऊन हो गई और मौत को इस ने अपने सामने देख लिया। तब इस ने अपने समस्त इल्हामों को शैतानी कल्मे समझा होगा और इस वक़्त उस को अपने बारे याद आया होगा कि मैं ग़लती पर था। यह बात बिलकुल अक्ल से दूर और क़ियास के विरुद्ध है कि वह इस क़दर ठोकरें खाकर और वह ताऊन जो मेरी तरफ़ संम्बधित करता था इस में अपने आप को पीड़ित देखकर और मेरी कामयाबियों को अपने आख़िरी दम में विचार में लाकर फिर भी वह अपनी पहली हालत पर क़ायम रहा हो जब उस को याद आता होगा कि मैंने मूसा होने का दावा किया था और अपनी किताब का नाम असाए मूसा रखा था और यह तमन्ना की थी कि यह असा उस शख़्स को हलाक कर देगा जो मसीह मौऊद का दावा करता है और जब उस को याद आता होगा कि मैं ने इस शख़्स के बारे में जो मसीह मौऊद का दावा करता है अपनी किताब असाए मूसा में पेशगोई की थी कि वह मेरी ज़िन्दगी में ताऊन से मरेगा और जब उस को याद आता होगा कि मैंने इसी किताब में पेशगोई की थी कि मैं नहीं मरूँगा जब तक अपने इस दुश्मन को नाबूद न कर लूं। तो हर एक इन्सान सोच सकता है कि इस हालत में जबकि ताऊन ने इस को पकड़ा कितने दर्द तथा हसरत उस के साथ होते होंगे। कौन यक़ीन कर सकता है कि बावजूद इस क़दर असफलता के और खुल जाने इस बात के कि इस के सब इल्हाम झूठे निकले फिर भी ताऊन के वक़्त उस को अपने मूसा होने पर यक़ीन था? नहीं नहीं हरगिज़ नहीं बल्कि ताऊन ने समस्त विचार उस के पाश पाश कर दिए होंगे और सूचित कर दिया होगा कि वह ग़लती पर था। अत: इस घटना से बहुत पहले मेरे पर ख़ुदा ने ज़ाहिर किया था कि वह इन बुरे विचारों पर क़ायम नहीं रहेगा और आख़िर इन विचारों से रुजू करेगा। अत: इस में शक नहीं कि जब उस को आचानक ताऊन और असमय मौत का नज़ारा पेश आया जिसको वह ख़ूब जानता था कि यह असमय और मेरे दावा के विरुद्ध है तो निसन्देह इस नज़ारा ने इस को यक़ीन दिलाया होगा कि इस के समस्त इल्हाम शैतानी थे इस सूरत में लाइलाज हसरत के साथ इस ने समझ लिया होगा कि मैं ग़लती पर था और जो कुछ मैंने समझा वह ख़ुदा तआला की तरफ़ से नहीं था और आगे चल कर हम वर्णन करेंगे कि ऐसा समझना इसके लिए ज़रूरी था क्योंकि इस नज़ारा मौत से उसके इल्हामी बातें एक बार ऐसे झूठे साबित हुए जैसे अचानक तौर पर एक दीवार गिरती है। यह इसके लिए एक सोच से परे बात था कि मैं इस ताऊन से बच जाऊंगा क्योंकि 7 अप्रैल 1907 ई को जिस तारीख़ वह मरा और इस से पहले ऐसी तेज़ और हलाक करे वाली ताऊन लाहौर में थी कि कई दिनों दो दो सौ से ज़्यादा लोग मरते थे और इस का एक प्रिय इस से एक दिन पहले ताऊन से मर गया था जिसके जनाज़ा पर जाकर वह ताऊन ख़रीद लाया। अत: इस हलाक करने वाली बीमारी में कौन कह सकता है कि मैं बच जाऊंगा बल्कि हज़ारों लोग ताऊन में पीड़ित होते ही वारिसों के लिए वसीयत लिखा देते हैं। अत: ताऊन में पीड़ित होने के साथ ही उस की समस्त बुराइयां दरिया में डूब गई। और इस ने हज़ारों मरते हुए इन्सानों को याद करके और विशेष रूप से याक़ूब की मौत को तसव्वुर में लाकर समझ लिया कि मैं ज़रूर मरूँगा ऐसी हालत में क्योंकर वह इस बात पर क़ायम रह सकता था कि मैं मूसा हूँ। अत: यह ख़ुदा का रहम है कि वह अपने बुरे अक़ीदों को साथ नहीं ले गया। और ख़ुदा ने इस का गला पकड़ कर इस से रुजू कराया। और उन लोगों में दाख़िल हो गया जिनके बारे में ख़ुदा तआला फ़रमाता है।

وَاِنْ مِّنْ اَهْلِ الْكِتٰبِ اِلَّا لَيُؤْمِنَنَّ بِهٖ قَبْلَ مَوْتِهٖ

(हक़ीकतुल वह्य रूहानी ख़ज़ायन भाग 22)

महान विजय

अमरीका का झूठा नबी डाक्टर जान इलैक्ज़ान्डर डोई मेरी भविष्यवाणी के अनुसार मृत्यु का शिकार हुआ

ऊपर वर्णन किए गए विषय के बारे में हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने लिखा कि

" स्पष्ट हो कि यह व्यक्ति जिसका नाम शीर्षक में लिखा गया है इस्लाम का नितान्त कट्टर श्रेणी का शत्रु था तथा इसके अतिरिक्त उसने नबी होने का झूठा दावा किया तथा समस्त नबियों के सरदार, समस्त सच्चों में सर्वाधिक सत्यनिष्ट रसूलों में सर्वश्रेष्ठ, पवित्रात्माओं के इमाम हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को झूठा और ख़ुदा पर झूठ बांधने वाला समझता था तथा अपनी अन्त: मलिनता से गन्दी गालियां तथा अश्लील शब्दों से आप(स) को याद करता था। अत: इस्लाम धर्म से ईर्ष्या के कारण उसके अन्दर बहुत अपवित्र आदतें मौजूद थीं और जिस प्रकार कि सुअरों के आगे मोतियों का कुछ महत्त्व नहीं इसी प्रकार वह इस्लाम के एकेश्वरवाद को

बहुत ही तिरस्कारपूर्वक देखता था और उसको समूल मिटाना चाहता था तथा हज़रत ईसा को ख़ुदा जानता था और तीन ख़ुदाओं की आस्था को समस्त संसार में प्रसारित करने के लिए इतना जोश रखता था कि मैंने इसके बावजूद कि पादरियों की सैकड़ों पुस्तकें देखीं किन्तु ऐसा जोश किसी में न पाया। अत: उसके अखबार "न्यूज़ आज़ हीलिंग" दिनांक 19 दिसम्बर 1093 ई. और 14 फरवरी 1907 ई. में ये वाक्य हैं -

"मैं ख़ुदा से दुआ करता हूँ कि वह दिन शीघ्र आए कि इस्लाम दुनिया से नाबूद हो जाए। हे ख़ुदा तो ऐसा ही कर। हे ख़ुदा इस्लाम को हलाक कर दे।"

और फिर अपने पर्चा अख़बार 12 दिसम्बर 1903 ई में अपने आप को सच्चा रसूल और सच्चा नबी क़रार देकर कहता है कि

"अगर मैं सच्चा नबी नहीं हूँ तो फिर सारी ज़मीन पर कोई ऐसा शख़्स नहीं है जो ख़ुदा का नबी हो।"

इलावा इस के वह सख़्त मुशरिक था और कहता था कि मुझको इल्हाम हो चुका है कि पच्चीस वर्ष तक यसू मसीह आसमान से उतर आएगा और हज़रत ईसा को वास्तव में ख़ुदा जानता था और साथ उस के मेरे दिल को द:ख देने वाली एक यह बात थी जैसा कि मैं लिख चुका हूँ कि वह निहायत दर्जा पर हमारे नबी करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम का दुश्मन था और मैं इस का पर्चा अख़बार न्यूज़ आज़ हीलिंग लेता था और इस की बद-ज़ुबानी पर हमेशा मुझे सूचना मिलती थी। जब उस की शौख़ी चरम तक पहुंची तो मैंने अंग्रेज़ी में एक चिट्ठी उस की तरफ़ रवाना की और मुबाहला के लिए इस से दरख़ास्त की ताकि ख़ुदा तआला हम दोनों में से जो झूठा है इस को सच्चे की ज़िन्दगी में हलाक करे। यह दरख़ास्त दो बार यूनियन 1902 ई और फिर 1903 ई में इस की तरफ़ भेजी गई थी और अमरीका के कुछ नामी अख़बारों में भी प्रकाशित की गई थी जिनके नाम हाशिया में दर्ज हैं

(हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने 32 अख़बारों के नाम हाशिया में प्रकाशित फ़रमाए हैं जिनमें इस बारे में ख़बरें प्रकाशित हुईं।)

और इस निबन्ध मुबाहला में मैं ने झूठे पर बद-दुआ भी की थी और ख़ुदा तआला से यह चाहा था कि ख़ुदा झूठे का झूठ अपने फ़ैसला से खोल दे। और यह मेरा निबन्ध मुबाहला का जैसा कि अभी लिख चुका हूँ अमरीका के कुछ दैनिक और नामी अख़बारों में अच्छी तरह प्रकशित हो गया था। और ये अख़बारें अमरीका के ईसाईयों की थीं जिनका मुझसे कुछ सम्बन्ध न था और अख़बारों में प्रकाशित कराने की इस लिए मुझे ज़रूरत पेश आई कि डाक्टर डोई झूठे नबी ने सीधा मुझको जवाब नहीं दिया था आख़िर मैंने वह निबन्ध मुबाहला अमरीका के इन नामी अख़बारों में जो दैनिक हैं और प्रचुरता से दुनिया में जाते हैं प्रकाशित करा दिया। यह ख़ुदा का फ़ज़ल है कि बावजूद यह कि एडीटर उन अख़बारों के अमरीकन ईसाई थे और इस्लाम के विरोधी थे परन्तु उन्होंने निहायत तेज़ी से मेरे निबन्ध मुबाहला को ऐसी प्रचुरता से प्रकाशित कर दिया कि अमरीका और यूरोप में इस की धूम मच गई और हिन्दुस्तान तक इस मुबाहला की ख़बर हो गई। और मेरे मुबाहला का ख़ुलासा निबन्ध यह था कि इस्लाम सच्चा है और ईसाई मज़हब का अक़ीदा झूठा है और मैं ख़ुदा तआला की तरफ़ से वही मसीह हूँ जो आख़िरी ज़माना में आने वाला था और नबियों की ख़बरों में उस का वादा था और इसी तरह मैंने इस में लिखा था कि डाक्टर डोई अपने दावा रसूल होने और तस्लीस के अक़ीदा में झूठा है अगर वह मुझसे मुबाहला करे तो मेरी ज़िन्दगी में ही बहुत सी हसरत और दु:ख के साथ मरेगा। और अगर मुबाहला भी न करे तब भी वह ख़ुदा के अज़ाब से बच नहीं सकता। इस के जवाब में बदक़िस्मत डोई ने दिसम्बर 1903 ई के किसी पर्चा में और 26 सितम्बर 1903 ई इत्यादि के अपने पर्चों में अपनी तरफ़ से यह कुछ पंक्तियां अंग्रेज़ी में प्रकाशित कीं जिनका अनुवाद नीचे लिखा है

"हिन्दुस्तान में एक मूर्ख मुहम्मदी मसीह है जो मुझे बार-बार लिखता है कि यसू मसीह की क़ब्र कश्मीर में है और लोग मुझे कहते हैं कि तू इसका उत्तर क्यों नहीं देता और यह कि तू क्यों इस व्यक्ति का उत्तर नहीं देता किन्तु क्या तुम विचार करते हो कि मैं इन मच्छरों और मक्खियों का उत्तर दूंगा। यदि मैं इन पर अपना पांव रखूं तो मैं इनको कुचल कर मार डालूंगा।"

और फिर 19 दिसम्बर 1902 ई. के अख़बार में लिखता है कि —

"मेरा काम यह है कि मैं पूर्व, पश्चिम, उत्तर और दक्षिण से लोगों को एकत्र करूं और मसीहियों को इस शहर और दूसरे शहरों में आबाद करूं यहां तक कि वह दिन आ जाए कि मुहम्मदी धर्म संसार से मिटाया जाए। हे ख़ुदा हमें वह समय दिखा।"

निष्कर्ष यह कि यह व्यक्ति मेरे मुबाहला के लेख के पश्चात् जो यूरोप और अमरीका तथा इस देश में प्रकाशित हो चुका था अपितु समस्त संसार में प्रकाशित हो चुका था उद्दण्डता में दिन-प्रतिदिन बढ़ता गया और इस ओर मुझे यह प्रतीक्षा थी कि मैंने जो कुछ अपने बारे में तथा उसके बारे में ख़ुदा तआला से फैसला चाहा है ख़ुदा तआला अवश्य सच्चा फैसला करेगा और ख़ुदा तआला का फ़ैसला सच्चे और झूठे में अन्तर करके दिखा देगा।

और मैं इस बारे में हमेशा ख़ुदा तआला से दुआ करता था तथा झूठे की मृत्यु चाहता था। अत: कई बार ख़ुदा तआला ने मुझे सूचना दी कि —

तू विजयी होगा और शत्रु को मृत्यु दी जाएगी। फिर डोई के मरने से लगभग पन्द्रह दिन पूर्व ख़ुदा तआला ने अपने कलाम के द्वारा मुझे मेरी विजय की सूचना दी जिसे मैं उस पुस्तक जिसका नाम "क़ादियान के आर्य और हम" के टायटल पृष्ठ के दूसरे पृष्ठ में डोई की मृत्यु से लगभग दो सप्ताह पूर्व प्रकाशित कर चुका हूं और वह यह है —

ताज़ा निशान की भविष्यवाणी

ख़ुदा तआला कहता है कि मैं एक ताज़ा निशान प्रकट करूंगा जिसमें महान विजय होगी वह समस्त संसार के लिए एक निशान होगा (अर्थात् उसका प्रकटन केवल हिन्दुस्तान तक सीमित नहीं होगा) और ख़ुदा के हाथों से तथा आकाश से होगा। चाहिए कि प्रत्येक आंख उस की प्रतीक्षा करे क्योंकि ख़ुदा उसे शीघ्र से प्रकट करेगा ताकि वह यह साक्ष्य दे कि वह विनीत जिसे समस्त जातियां गालियां दे रही हैं उसकी ओर से है। मुबारक है वह जो उस से लाभ प्राप्त करे।

विज्ञापन देने वाला

मिर्ज़ा ग़ुलाम अहमद मसीह मौऊद

प्रसारित 20 फ़रवरी 1907 ई.

अब प्रकट है कि ऐसा निशान (जो महान विजय का कारण है) जो समस्त संसार एशिया और अमरीका तथा यूरोप और हिन्दुस्तान के लिए एक खुला-खुला निशान हो सकता है वह यही डोई के मरने का निशान है , क्योंकि मेरी भविष्यवाणियों से जो अन्य निशान प्रकट हुए हैं वे तो पंजाब और हिन्दुस्तान तक ही सीमित थे, अमरीका और यूरोप के किसी व्यक्ति को उनके प्रकट होने की सूचना न थी परन्तु यह निशान पंजाब से भविष्यवाणी के तौर पर प्रकट होकर अमरीका में जाकर ऐसे व्यक्ति के पक्ष में पूरा हुआ जिसे अमरीका और यूरोप का प्रत्येक व्यक्ति जानता था तथा उसके मरने के साथ ही तार के माध्यम से उस देश के अंग्रेज़ी अखबारों को सूचना दी गई। अत: पायनीयर ने (जो इलाहाबाद से निकलता है) पर्चा 11 मार्च 1907 ई में और सिविल एण्ड मिल्ट्री गज़ट ने (जो लाहौर से निकलता है) पर्चा 12 मार्च 1907 ई और इण्डियन डेली टेलीग्राफ ने जो (लखनऊ से निकलता है) पर्चा 12, मार्च 1907 ई. में इस सूचना को प्रकाशित किया है। अत: इस प्रकार से लगभग समस्त संसार में यह सूचना प्रकाशित की गई तथा स्वयं यह व्यक्ति अपनी सांसारिक हैसियत एवं प्रतिष्ठा की दृष्टि से ऐसा था कि तेजस्वी नवाबों एवं राजकुमारों की भांति माना जाता था। अत: विब ने जो अमरीका में मुसलमान हो गया है मेरी ओर उसके बारे में एक पत्र लिखा था कि डाक्टर डोई इस देश में नितान्त सम्मानपूर्वक एवं राजकुमारों के समान

शेष पृष्ठ 13 पर

पृष्ठ 1 का शेष

में यह ऐलान करके पीछा छुड़ाना पड़ा कि यह मसला आर्या समाज के उसूलों में दाख़िल नहीं है। अगर कोई मैंबर आर्या समाज का उस का दावेदार हो तो इस से सवाल करना चाहिए और इसी को जवाब देना है।"

(तारीख़ अहमदियत भाग1पृष्ठ 153)

1880 से1884 ई ब्राहीन अहमदिया की चार भाग प्रकाशित हुए। यह आपकी पहली और विश्व प्रसिद्ध पुस्तक है। यह वह ज़माना था जबकि ईसाइयत, आर्या समाज और ब्रह्मो समाज अत्यधिक सुनियोजित रूप से इस्लाम पर हमला कर रहे थे। इस्लाम उनकी मार झेल-झेल कर बिलकुल दीन और कमज़ोर हो गया था। जब ब्राहीन अहमदिया प्रकाशित हो कर सामने पर आई तो मुस्लमानों की जान में जान आई। आप यह किताब समस्त धर्मों के मुक़ाबला पर इस्लाम की सच्चाई साबित करने के लिए लिखी थी। और उसे तीन सौ सुदृढ़ और मज़बूत तर्कों से सुसज्जित फ़रमाया। आप ने चैलेंज दिया कि अगर कोई इस की दलीलों को तोड़ कर दिखा दे चाहे आधी दलीलें तोड़ दे और चाहे पांचवां हिस्सा ही तोड़ कर दिखा दे तो इस को दस हज़ार रुपए का इनाम दिया जाएगा।

इस पुस्तक से मुस्लमान ख़ुशी से चहक उठे कि शुक्र है कि इस्लाम का शानदार रक्षा करने वाला एक पहलवान पैदा हो गया है। हक़ीक़त यह है कि हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने इस्लाम पर आरोपों की सिर्फ प्रतिरक्षा ही नहीं की बल्कि इस्लाम की सच्चाई के अकाट्य दलीलें लेकर इस ज़ोर शोर से हमला करते हुए कि मुख़ालिफ़ बेहोशी के अवस्था में आ गया। हर पढ़ा लिखा मुस्लमान घराना बराहीन के अध्ययन को ज़रूरी समझने लगा। उल्मा ने इस पर शानदार रिव्यू लिखे। मौलवी मुहम्मद हुसैन बटालवी ने लिखा कि चौदह सौ साल में इस जैसी पुस्तक नहीं लिखी गई। अगर हुई है तो कोई हमें बतलाए जिसमें इस ज़ोर शोर से दूसरे धर्मों से मुक़ाबला पाया जाता हो। लुधियाना के सूफ़ी अहमद जान साहिब ने भी ज़ोरदार टिप्पणी फ़रमाई और दिल तथा जान से इस किताब पर आशिक़ हो गए। आप ने अपने एक शेअर में कहा

हम मरीज़ों की है तुम्हीं पर नज़र
तुम मसीहा बनो ख़ुदा के लिए

ब्राहीन अहमदिया की ख़ूबी और इस के महत्व और इस के जवाब के लिए दस हज़ार रुपए के इनामी चैलेंज के बारे में सय्यदना हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के कुछ अपदेश नीचे लिखे हैं। हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम फ़रमाते हैं

दस हज़ार रुपए का इनामी चैलेंज

ख़ुदा तआला ने इस विनीत बन्दा को इस ज़माना में पैदा करके और सैंकड़ों निशान आसमानी और ग़ैब के चमत्कारों और मआरिफ़ तथा हक़ायक़ प्रदान फ़र्मा कर और सैंकड़ों अकाट्य दलीलों पर इल्म प्रदान कर यह इरादा फ़रमाया है कि ताकि कुरआन की सच्ची शिक्षा को हर क़ौम और हर देश में प्रकाशित और जारी फरमाए और अपनी हुज्जत उन पर पूरी करे। और इसी इरादा की वजह से ख़ुदा तआला ने इस विनीत को यह तौफ़ीक़ दी कि समझाने के अन्तिन प्रयास के रूप में दस हज़ार रुपया का इश्तिहार किताब के साथ शामिल किया गया और दुश्मनों और मुख़ालिफ़ों की गवाही से आसमानी निशानी पेश की गई और उन के सम्मुख और मुक़ाबला के लिए समस्त मुख़ालफ़ीन को सम्बोधित किया गया ताकि कोई तीका समझाने के अन्तिम प्रयास का बाक़ी ना रहे।

(बराहीन अहमदिया रूहानी ख़ज़ायन भाग 1 पृष्ठ 596 हाशिया 3)

बराहीन के छः महान लाभ

(1) यह किताब धर्म की मुहिमों के वर्णन करने में वर्णन में कमज़ोर नहीं बल्कि वे समस्त सच्चाइयां कि जिन पर धर्म के ज्ञान के नियम आधारित हैं और वे समस्त उच्च हक़ीक़तें कि जिनकी हैयत इज्तिमाई का नाम इस्लाम है वे सब इस में लिखी और वर्णित हैं।

(2) यह किताब तीन सौ सुदृढ़ और मज़बूत सच्ची दलीलें इस्लाम और इस्लाम के उसूल पर आधारित रखती है कि जिनके देखने से सदाक़त इस मज़बूत धर्म की प्रत्येक सच्चाई के इच्छुक पर प्रकट होगी।

(3) जितने हमारे विरोधी हैं यहूदी, ईसाई, मजूसी, आर्या, ब्रहमो, बुत की पूजा करने वाले, नास्तिक, नेचरी, इबाहती, (हलाल तथा हराम अन्तर न करने

पृष्ठ 2 का शेष

की आयतों पर ईमान रखता हूँ उसी तरह बिना किसी कण मात्र अन्तर के ख़ुदा की उस स्पष्ट वह्यी (ईशवाणी) पर ईमान लाता हूँ जो मुझे हुई। जिसकी सच्चाई उसके निरन्तर निशानों से मुझ पर खुल गयी है और मैं बैतुल्लाह (अर्थात काबा शरीफ) में खड़े होकर यह क़सम खा सकता हूँ कि वह पवित्र ईशवाणी जो मुझ पर उतरती है वह उसी ख़ुदा की वाणी है जिसने हज़रत मूसा और हज़रत ईसा और हज़रत मुहम्मद मुस्तफा सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम पर अपनी वाणी अवतरित की थी। मेरे लिए धरती ने भी गवाही दी और आसमान ने भी। इस तरह से मेरे लिए आसमान भी बोला और ज़मीन भी, कि मैं ख़लीफतुल्लाह (अल्लाह का ख़लीफा) हूँ। मगर भविष्यवाणियों के अनुसार आवश्यक था कि इन्कार भी किया जाता इसलिए जिनके दिलों पर पर्दे हैं वे स्वीकार नहीं करते। मैं जानता हूँ कि अवश्य ख़ुदा मेरी सहायता करेगा जैसा कि वह सदैव अपने रसूलों (अवतारों) की सहायता करता रहा है। कोई नहीं कि जो मेरे मुक़ाबले पर ठहर सके, क्योंकि ख़ुदा की सहायता उनके साथ नहीं।"

(एक ग़लती का निवारण रूहानी ख़ज़ायन भाग 18 पृष्ठ 208)

☆ ☆ ☆

वाला) लामज़हब सब की शंकाएं और शक का इस में जवाब है।

(4) चौथा लाभ यह है जो इस में इस्लाम के उसूलू के मुकाबला में विरोधियों के उसूल पर भी कमाल तहक़ीक़ और सच्चाई से अक्ली तौर पर बहस की गई है

(5) पांचवां इस किताब में यह लाभ है कि इस के पढ़ने से रब्बानी कलाम के हक़ायक़ और मआरिफ़ मालूम हो जाएंगे और हिक्मत और मार्फ़त इस पवित्र किताब की कि जिसके नूर रूह अफ़रोज़ से इस्लाम की रोशनी है सब पर प्रकट हो जाएगी।

(6) छटा यह लाभ है जो इस किताब की बेहसों को निहायत मज़बूती और उम्दगी से इस्तिदलाल के नियमों के रूप में मगर बहुत आसान तौर पर कमाल ख़ूबी और मौज़ूनियत और लताफ़त से वर्णन किया गया है और यह एक ऐसा तरीक़ा है कि जो तरक़्क़ी उलूम और पुख़्तगी फ़िक्र और नज़र का एक उच्च माध्यम होगा। (इसी तरह पृष्ठ129 से 131)

لِيُظْهِرَهٗ عَلَى الدِّيْنِ كُلِّهٖ की पेशगोई ब्राहीन से पूरी हो गई

चूँकि ख़ुदा तआला ने विशेष गुणों से इस विनीत को निर्दिष्ट किया है और ऐसे ज़माना में इस ख़ाकसार को पैदा किया है कि जो तब्लीग़ की सेवा की पूर्णता के लिए निहायत ही सहायक तथा मददगार है। इस लिए उसने अपने फ़ज़्ल तथा इनायत से यह ख़ुशख़बरी भी दी है कि प्रारम्भ से यही निर्दिष्टि है कि आयत करीमा ऊपर वर्णन की गई (अर्थात لِيُظْهِرَهٗ عَلَى الدِّيْنِ كُلِّهٖ) और आयत وَاللّٰهُ مُتِمُّ نُوْرِهٖ का रुहानी तौर पर मिस्दाक़ यह विनीत है और ख़ुदाए तआला इन दलीलों तथा तर्कों को और उन सब बातों को कि जो इस विनीत ने विरोधियों के लिए लिखी हैं ख़ुद मुख़ालिफ़ों तक पहुंचा देगा और उनका असहाय और निरूत्तर और पराजित होना दुनिया में ज़ाहिर करके मफ़हूम ऊपर वर्णन की गई आयत का पूरा कर देगा। फ़ालहम्दों लिल्लाह अला ज़ालेक़।

(इसी तरह पृष्ठ 597 हाशिया 3)

पाठको हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने फ़रमाया था कि ब्राहीन का जवाब क़यामत तक नहीं दिया जा सकेगा एक सौ चालीस साल हो गए किसी ने इस का जवाब नहीं दिया। इस से का उत्तर देना वाक़ई क़यामत तक किसी को नसीब नहीं हो सकता।

(मन्सूर अहमद मसरूर)
(अनुवादक शेख़ मुजाहिद अहमद शास्त्री)

☆ ☆ ☆